विषय सूची

समर्पण

फरमीन को

जिसका वर्णन इस पुस्तक के अन्तिम भाग मे
आया है

भूमिका

"शिक्षा और समाज" जब प्रथम बार उर्दू में प्रकाशित हुई तो इसका प्रथम संस्करण लगभग साल के अन्दर समाप्त हो गया। इस पुस्तक की लोकप्रियता का यह बड़ा प्रमाण है। इसी के साथ लोगों की यह अभिलाषा भी रही कि यदि इसका हिन्दी संस्करण भी होता तो अधिक अच्छा होता।

मैं उस समय से बराबर इस प्रयत्न में था कि कोई ऐसा मनुष्य मिले जो हिन्दी उर्दू का ज्ञाता होने के साथ २ शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं से भी परिचित हो—ताकि वह इस पुस्तक का उचित अनुवाद कर सके।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मैंने अपने एक प्रिय शिष्य श्री वृज विहारी लाल सक्सेना, एम० ए०, बी० टी० विशारद, में जो जयपुर राज्य की ओर से एक वर्ष की बुनियादी शिक्षा की ट्रेनिंग लेने के लिये यहाँ भेजे गये थे, ये सब गुण एक साथ पाये और उन्होंने भी सहर्ष इस पुस्तक का अनुवाद करना स्वीकार कर लिया। आपने पूरी पुस्तक कुछ सप्ताहों में अनुवाद करके मुझे सुनाई। मुझे पूर्ण संतोष है कि इस अनुवाद में न केवल उन्होंने मेरे अभिप्राय

को ठीक ढंग से अनुवाद किया है बल्कि भाषा और साहित्य की विशेषताओं को भी उर्दू से हिन्दी में परिवर्तित किया है।

इस कार्य में उन्होंने अपने शिष्यों से भी सहायता ली है जिनमें श्री एम० डी० विमलेश और एस० एस० करणावत के नाम उल्लेखनीय हैं। मैं इन सबका हृदय से आभारी हूँ।

आशा है कि यह हिन्दी संस्करण भी जनता को उसी प्रकार प्रिय होगा जिस प्रकार उर्दू संस्करण हो चुका है।

जामिया

सईद अंसारी

परिचय

विद्या और यंत्रों के कामों की भांति सामाजिक संस्थाओं में भी कोरा अनुसरण व्यर्थ ही सिद्ध होता है। हमारे देश में शिक्षा का कार्य प्रायः इसी प्रकार का अनुसरण है। पाठशालाएं बनती हैं, इसलिये कि सभ्य देशों में पाठशालाए होती हैं। यह कोई विचार नहीं करता और न प्रश्न करता कि इन पाठशालाओं से हमारे सभ्य समाज के जीवन पर कोई अच्छा प्रभाव भी पड़ता है अथवा नहीं। अध्यापक नौकर रक्खे जाते हैं, इसलिये कि पाठशालाओं में अध्यापक अवश्य होने चाहियें। इस से किसी को सरोकार नहीं कि समाज का यह सब से अधिक महत्वपूर्ण कार्य करने वाला कहीं समाज में सब से नीची अवस्था का तो नहीं है। कोई नहीं देखता कि इस बेचारे को कहीं २ चार-पॉच रुपये मासिक पर जीवन-व्यतीत करने का चमत्कार भी दिखाना पड़ता है।

शिक्षा के किसी अच्छे ढंग का समर्थन यदि कोई भूल कर करदे तो सबसे बड़ा आक्षेप यह लगाया जाता है कि इसके लिये तो अच्छे अध्यापकों की आवश्यकता होगी। तात्पर्य यह है कि शिक्षा की वही प्रणाली उत्तम समझी जाती है जो बुरे अध्यापकों द्वारा चलाई जा सके। सारांश यह है कि नाम सभी होने चाहियें काम हो या न हो। शायद यही नक्काली की उच्चतम श्रेणी है।

सीधे सादे मनुष्य इस प्रकार की शिक्षा से हमारी राष्ट्रीय-गति-हीन अवस्था में कोई लाभप्रद परिवर्तन की आशा रखते हों तो

रक्खें। उन्हें उनके भोलेपन का पुरस्कार निराशा के रूप में मिलता रहेगा। झूठ सच की सेवा में प्रपञ्च का कर देता रहेगा ताकि उसका काम बेरोक-टोक चलता रहे। जब तक शिक्षा का काम करने वाले अपना उत्तरदायित्व सहृदयता के साथ पूरा न करेंगे बल्कि उन्हें स्वेच्छा या अनिच्छा से अपने दिन व्यतीत करने का एक साधन जानेंगे—जब तक शिक्षा राष्ट्रीय जीवन में मूल मंत्र का रूप न धारण करेगी और केवल बाह्य सजावट की सामग्री समझी जावेगी—उस समय तक यह शिक्षा न तो सामाजिक जीवन के अमूल्य रत्नों की रक्षा कर सकेगी और न अपने चमत्कारिक प्रभाव से नवीन आदर्शों की उत्पत्ति ही। जब तक पाठशाला अपने वातावरण के लिये एक लाभप्रद संस्था का रूप न ले लेगी और बाध्य ही बनी रहेगी—जब तक शिक्षा राष्ट्रीय जीवन की वास्तविक समस्याओं से खिंचकर चलेगी—जबतक निर्धनता, बीमारी, अज्ञानता एवं अंधविश्वास के सामने शिक्षा आगे कदम बढ़ाने से डरेगी—उस समय तक हमारे देश में शिक्षा व्यर्थ ही रहेगी। सामाजिक दृष्टि से भी और व्यक्तिगत मानसिक विकास की दृष्टि से भी। कारण यह है कि सामाजिक और मानसिक शिक्षा दोनों के गढ़ व्यर्थ की बातों और कोरे अनुसरण से नहीं जीते जा सकते।

शिक्षा के सम्बन्ध में जिन लोगों का यह विचार हो, उन्हें प्रसन्नता होगी कि हमारी शिक्षा का काम करने वालों की दृष्टि ऐसे शिक्षा के प्रयोगों पर पड़ रही है, जो हम से मिलते-जुलते हालात में सहृदय अध्यापकों ने चला रखा है। जहां शिक्षा ने समाज की

समस्याओं को अपनाया है और उनके निवटारे में सहायता दी है। जहां वास्तविकता से भाग कर अध्यापकों ने अपने लिये कोई हवाई किले नहीं बनाये हैं बल्कि उनके सम्मुख होकर सँवारा और सुधारा है।

मेरे प्रिय मित्र और साथी सईद अंसारी साहब ने इस पुस्तक में जो आपके हाथ में है इसी प्रकार के एक प्रयोग से आपको परिचित कराने का प्रयत्न किया है। इसका यह उद्देश्य नहीं कि कोई उसका अनुसरण करे बल्कि इसलिये कि उसके प्रकाश में अपनी समस्याओं पर दृष्टि डाली जाय। इस प्रयोग को उन्होंने कार्य रूप मे स्वयं अपने अमेरिका में निवास के समय में ध्यान से देखा है, और बड़ी अच्छी तरह से उसका वर्णन यहाँ किया है। उनका विचार है कि अध्यापकों की पाठशाला की ओर से इस प्रकार के अन्य प्रयोगों से भी देश के अध्यापकों को परिचित करे। मुझे आशा है कि सईद अंसारी साहब और उनके सहकारी इस प्रकार और इससे अधिक अपने शिष्यों के द्वारा शिक्षा को राष्ट्रीय-जीवन से सम्बन्धित करने मे सफल होंगे और उनके साथ-साथ देश में अध्यापकों का वह समुदाय बढ़ता जायेगा जो शिक्षा को एक पवित्र संघर्ष समझेगा और उसके लिये सारी शक्तियां लगा देगा। तभी हमारे दिन फिरेंगे।

ज़ाकिर हुसैन,

जामिया-मिल्लिया, देहली।

२८—६—४६

पहिला परिच्छेद

मेक्सिको

मेक्सिको संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण में एक छोटा सा देश है। उसका अधिक भाग पहाड़ी है और उसके पर्वतों में से कुछ की चोटियाँ १७००० फीट ऊँची हैं। मेक्सिको नगर कोई १०००० फीट की ऊँचाई पर स्थित है। उसकी कुछ चोटियाँ ज्वालामुखी पर्वत भी हैं। उसका मैदानी भाग वर्षा ऋतु में बहुत हरा भरा रहता है, परन्तु गर्मी की ऋतु में शुष्क और सूखा हो जाता है।

मेक्सिको संसार के उन कुछ देशों में है जहाँ हजारों वर्षों की प्राचीन सभ्यता के कुछ चिन्ह अब तक मिलते हैं, जिनका इतिहास आज से कोई १० हजार वर्ष पहले से आरंभ होता है।

लगभग १० हजार वर्ष पूर्व 'टालटिक' जाति ने सब से पहले यहाँ अपनी सभ्यता की नींव डाली और पूजा पाठ के लिये मंदिर बनवाये। इनके बाद 'एज़टिक' लोग आये और उन्होंने जान बूझ कर या वैसे ही इन्हीं चिन्हों पर अपनी स्मृतियाँ बनाईं। उनकी सभ्यता पश्चिमी गोलार्ध में सबसे अधिक गौरवशाली समझी जाती है।

परन्तु ईसा की सोलहवीं शताब्दी में युरोप से स्पेन निवासी आने शुरू हुये और उन्होंने 'एजटिक' जाति के ये सब नगर और चिन्ह नष्ट कर डाले—संभव है इस कार्य में कुछ हाथ उन ज्वालामुखी पर्वतों का भी हो। सारांश यह है कि इस मिट्टी के ढेर में प्राचीन सभ्यता के न जाने कितने चिन्ह छिपे हैं। १९०५ में मेक्सिको की केन्द्रीय सरकार ने इन चिन्हों की जाँच और खुदाई का कार्य आरंभ किया और उस समय से बहुत से ऊँचे ऊँचे अहराम (Pyramids), गौरव शाली मंदिर और सैंकड़ों चीजें प्रकाश में आई। "गवाड़ा लोप" मेक्सिको का एक बड़ा नगर है जिसमें 'माता मरियम' का एक बड़ा गिरजा भी है। इसमें बहुत अच्छी चित्रकारी हुई हुई है। इसी गिरजे में मरियम की दो सोने की मूर्त्तियाँ भी मनुष्याकार की रखी हुई हैं—इसके अतिरिक्त गिरजे के अंदर चाँदी-सोने का काम भी बहुत ही अच्छा किया हुआ है, जिसका मूल्य आंकना कठिन है।

मेक्सिको निवासी अधिकतर दो जातियों से सम्बन्ध रखते हैं। एक तो यहां के प्राचीन निवासी जो 'एजटिक' हिन्दी जाति के हैं और दूसरे स्पेनी जो यहाँ के शासक थे। इसके अतिरिक्त कुछ भाग मिश्रित जाति का है जो 'मेस्टेजो' कहलाता है।

स्पेन निवासी यद्यपि अपने जातीय सम्बन्ध पर गर्व करते हैं, फिर भी हिन्दी होना उस भूमि का और उसकी तमाम सम्पत्ति का स्वामी होना है।

निरंतर क्रांति के होते हुये भी वहां के मनुष्यों के मुखों पर

उल्लास और संतोष के चिन्ह दिखलाई पड़ते हैं और धार्मिक भिन्नता के होते हुये भी, कोई झगड़ा नहीं होता।

मेक्सिको की तमाम आबादी ग्रामीण है। उसकी जन संख्या का लगभग ५/६ गांवों में रहता है और १/६ भाग पहाड़ी भागों और भिन्न स्थानों पर बसा हुआ है। यहाँ के गांव बहुत छोटे होते हैं। उनकी जन संख्या प्रायः ३०० से ५०० तक होती है। कुछ गांव ऐसे भी हैं जिन की आबादी १०० ही है लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिन की जन संख्या लगभग १००० है। मेक्सिको के कुल गांवों की संख्या ६२००० से कुछ अधिक है। मेक्सिको में गांव दो प्रकार के हैं। एक तो इस प्रकार के गांव जिनके निवासी मजदूर हैं। मजदूर उजरत करने वालों की तरह रहते हैं। इन गांवों में जमीन के मालिक दूसरे लोग होते हैं और खेती करने वाले मजदूर की भांति काम करते हैं। दूसरे ऐसे गांव हैं जिनमें भूमि के मालिक स्वयं गांव के ही लोग हैं और वे जमीन को जोतते और बोते हैं। १६१० की क्रांति के पश्चात् ऐसे गांवों की संख्या बहुत बढ़ गई है और वे जमीनें, जो अब तक गांव से बाहर रहने वालों की थीं, इन किसानों को बांट दी गई हैं।

मेक्सिको के गांव में भांति २ के हाथ के काम और कलाएँ भी प्रचलित हैं। उदाहरणार्थ—कपड़ा बुनना, टोकरी बनाना, मिट्टी का काम, चमड़े का काम तथा काँच का काम आदि। खेती बाड़ी का काम या तो किसी हाथ के काम के साथ या हाथ का काम किसी खेती बाड़ी के काम के साथ, सहायक धंधे की तरह, किया जाता है।

इन कलाकौशल की हैसियत बहुत साधारण होती है। उनके औज़ार भी कुछ अधिक ऊँचे ढंग के नहीं होते। मशीनें और कलें बहुत कम दिखलाई पड़ती हैं। बहुत से गांव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर लेते हैं। वाह्य पदार्थ, कुछ नगरों को छोड़ कर, कहीं दिखाई नहीं देते।

इनके वस्त्र बहुत सादे और साधारण होते हैं। पुरुषों के वस्त्रों में एक सफेद पाजामा और कुर्ते के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। स्त्रियाँ एक मैले रंग की साड़ी पहनती हैं। पुरुष और स्त्रियाँ नंगे पैर रहते हैं और जब कभी पांव में कुछ पहनते हैं तो एक प्रकार की 'चप्पलें' पहनते हैं जो कभी कभी ऊपर के फीतों से सुन्दर और रंगीन बना ली जाती हैं।

वस्त्रों की भांति इनके मकान भी बहुत सादे और स्वच्छ होते हैं। मामूली बांस की खपच्चियों पर फूस डाल दिया जाता है। इन छप्परों के बीच में एक कमरा होता है जो हर कार्य के लिये प्रयोग किया जाता है। कुछ मकान खपरेल के भी होते हैं। मकानों के बनाने में जलवायु और स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार कुछ अंतर होता है। वरना बहुधा मकान एक ही प्रकार के होते हैं। मेक्सिको के लोग बड़े मिलनसार होते हैं और 'एज़टिक' और 'स्पेनी' दोनों सभ्यताओं के मिश्रण ने उनके इस स्वभाव को और भी जागृत कर दिया है। इन्हें शिक्षा से बहुत प्रेम होता है और उसके लिये सभी कुछ करने को तत्पर रहते हैं। क्रांति के समय में 'भूमि और न्याय' उनका सबसे बड़ा नारा था।

हजारों मनुष्य गांव से आकर इस क्रांति में सम्मिलित हुये, और क्रांति को सफल बनाया।

उन्हें नियमित शिक्षा कभी नहीं दी गई थी। अब उन्होंने शिक्षा का मूल्य जाना। केवल दो बातें—एक उनका समाज-प्रेम और दूसरा सुधारों की प्रवृत्ति इसका मुख्य कारण थी, जिससे कि मेक्सिको भर में गांव की पाठशालाओं का एक जाल बिछ गया और ये पाठशालाएं अपने सामाजिक जीवन से इस प्रकार सम्बन्धित हैं कि यह जानना कठिन है कि मेक्सिको ने इन्हें बनाया या इन्होंने मेक्सिको को।

दूसरा परिच्छेद

ग्रामीण पाठशालाएं

पहले पहल शिक्षा विभाग की ओर से कुछ प्रचारक भेजे जाते हैं. जो गांव २ में इस नई शिक्षा का प्रचार करते हैं और उसके उद्देश्य और उनके लाभ से लोगों को परिचित कराते हैं। जब लोग इस बात को समझ लेते हैं तो फिर उस बस्ती में एक पाठशाला स्थापित हो जाती है और वहीं का एक स्थानीय मनुष्य उसका अध्यापक बना दिया जाता है। उस अध्यापक का वेतन तो केन्द्रीय शिक्षा विभाग द्वारा दिया जाता है, शेष सभी वस्तुएं उस बस्ती के लोग स्वयं जुटाते हैं। इस प्रकार एक पाठशाला की स्थापना में सरकार और बस्ती के निवासी दोनों बराबर भाग लेते हैं।

मेक्सिको की पाठशाला में वहां के निवासियों को बहुत सी सुविधाएं प्राप्त हैं। एक तो यह है कि इनके सामने कोई प्राचीन परम्परा और पुराने द्वेष नहीं हैं जो इन पाठशालाओं की स्थापना में बाधा डालते—दूसरे इन पाठशालाओं की स्थापना में कुछ अधिक व्यय भी नहीं होता, जो इनके लिये भार सा बन जाये। इसके विपरीत जिन उद्देश्यों और विचारों को ध्यान में रखकर ये पाठशालाएं स्थापित की जाती हैं, वे थोड़े बहुत उनमें पहले से

विद्यमान रहते हैं। इन पाठशालाओं का मुख्य ध्येय यह होता है कि लोगों में स्वयं-सेवा की भावना जाग्रत हो और लोग एक दूसरे के साथ मिल जुल कर काम करें। सरकार इन पाठशालाओं की स्थापना में जो नियम काम में लाती है, वह यह है कि पहिले तो उस बस्ती के लोग स्वयं उसकी आवश्यकता को प्रगट करें, फिर उस पाठशाला के लिए एक भूमि का टुकड़ा स्वयं दें; इसके बाद भवन की समस्या उत्पन्न होती है जिसके लिये तमाम आवश्यक वस्तुएं उसी क्षेत्र से मिल सकती हैं। अब रहा अध्यापक का प्रश्न। यह सरकार स्वयं हल कर देती है, जो साधारणतया उस बस्ती का निवासी होता है; और सरकार उसके वेतन का भार अपने ऊपर ले लेती है। इस प्रकार पाठशाला शुरू हो जाती है।

पाठशाला के स्थापन में दूसरी बड़ी चीज मनुष्यों की नैतिक सहानुभूति है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब पाठशाला स्थापित हो गई तो फिर उसका चलाना, उसके कार्यों को उन्नत करना, उत्साह और स्फूर्ति उत्पन्न करना, यह बस्ती के निवासियों का कर्त्तव्य है। उनका यह कर्त्तव्य होता है कि शिक्षा-विभाग और अध्यापक दोनों की सहायता करें और बालक तथा प्रौढ़ दोनों की उपस्थिति का ध्यान रक्खें। एक अध्यापक अपने अनुभव के आधार पर लिखता है कि "जब मैं ने अपनी पाठशाला का कार्यक्रम शुरू किया तो बच्चों की संख्या बहुत कम थी, इसलिये कि मुझ से पहिले जो अध्यापक थे, वे सदैव बस्ती के लोगों से लड़ाई झगड़ा रखते थे। मैं ने जो सब से पहिला काम किया वह यह कि लोगों

की सहानुभूति प्राप्त करनी शुरू की। और उनकी सहायता से बालकों की संख्या जो पहिले केवल ४२ थी एकदम १८६ हो गई। इसके अतिरिक्त २८ प्रौढ़ भी रात्री की पाठशाला में आने लगे।

पाठ्यक्रम :—

इस नवीन शिक्षा का सब से बड़ा उद्देश्य यह है कि उनके वातावरण में परिवर्तन किया जाय तथा जीवन को सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से उन्नत किया जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये जो पाठ्यक्रम प्रचलित किया गया है वह किसी शिक्षा विभाग द्वारा प्रस्तावित या किसी विशेषज्ञ का बनाया हुआ नहीं है और न उनके सर पर किसी अन्य विभाग द्वारा ही थोपा गया है। इन पाठशालाओं में जो चीजें बच्चों को सिखाई या पढ़ाई जाती हैं वह उनकी प्रतिदिन की आवश्यकताओं पर ही निर्भर होती हैं। अध्यापक इनकी आवश्यकताओं के आधार पर कार्यक्रम निश्चित कर लेता है और विभाग द्वारा उन आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रबन्ध करा दिया जाता है। उदाहरण के लिये स्वास्थ्य और स्वच्छता की समस्या को लीजिये। मान लीजिये बस्ती को साफ़ और स्वास्थ्यवर्धक पानी की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में बच्चों को साफ़ पानी की 'आवश्यकता' बतलाई जाती है: फिर उनको यह बतलाया जाता है कि किस प्रकार से पानी को साफ़ किया जाता है। और इस उद्देश्य के लिये एक साधारण सा ईंट चूने का फिल्टर (Filter) भी बनाकर दिखाया जा सकता है।

दूसरे इसी प्रकार मान लीजिये कि बस्ती में चेचक फैलने का

डर है। इस सम्बन्ध में सब से पहले उनको 'टीके' का महत्व बताया जायेगा। तत्पश्चात् अध्यापक या उसके सहकारी टीका लगाकर बतलावेंगे और इस प्रकार इस घातक बीमारी से पीछा छुड़ाया जायेगा। इसके साथ ही साथ अध्यापक उन्हें दवाओं का प्रयोग भी बतावेगा तथा दवाओं का एक संदूक भी पाठशाला में रखेगा। बस्ती के लोगों की सहायता से स्वच्छता और बच्चों के स्वास्थ्य की बातें भी की जाती हैं, जिनके परिणाम बहुत लाभदायक सिद्ध हुए हैं। इस प्रकार के प्रयत्नों द्वारा लोगों के स्वास्थ्य मे बड़ी उन्नति हुई है और बालकों की देख-भाल की चेष्टा भी सर्वप्रिय हो गई है। साधारणतया मनुष्यों की महत्वपूर्ण आवश्यकताएं उनके आर्थिक जीवन से सम्बन्धित होती हैं—अर्थात् वह किस प्रकार अपने जीवन के साधनों में उन्नति करे और अपनी अवस्थाओं को ठीक बनाएं। यही चीजे फिर पाठशाला मे सम्मिलित हो जाती हैं और बालकों तथा उनके माता-पिता दोनों की शिक्षा का साधन बन जाती हैं। कभी उनके भोजन में सतोल भोजन की आवश्यकता प्रतीत हुई तो पाठशाला में शाक-सब्जी बोने के लिए बागबानी की शिक्षा प्रचलित हुई—कभी कमान के सुधार और मरम्मत की आवश्यकता हुई तो पाठशाला के पाठ्यक्रम मे लकड़ी का काम सम्मिलित कर दिया गया। इसी प्रकार एक ही समय में बहुत से काम पाठशाला में चलते रहते हैं। यह सत्य है कि पाठशाला के सभी कार्यक्रम समयानुसार आरम्भ होते है, फिर भी उनमें बहुत समानता और स्थिरता

होती है, यह विशेषतः इस कारण से कि पाठशालाओं में काम की देख-भाल केन्द्रीय संचालकों के संरक्षण में होती है जो तुरन्त ही एक सफल प्रयोग को एक पाठशाला से दूसरी पाठशाला तक पहुंचा देते हैं। प्रबन्ध में लचक होने के कारण ऐसा करने में कोई कठिनाई भी नहीं होती। इसका सब से अच्छा उदाहरण पाठशाला में बागवानी का कार्यक्रम है। सब से पहले यह कार्य गांव की पाठशाला के एक अध्यापक ने अपनी बस्ती की आवश्यकता के आधार पर प्रारम्भ किया था। यहां यह काम बहुत सफल सिद्ध हुआ। फलतः यह शीघ्र ही सब पाठशालाओं में हवा की भांति फैल गया। कुछ पाठशालाओं में तो यह कार्य आज बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है। उदाहरण के लिये एक पाठशाला के संचालक का कहना है कि उसकी एक फसल से २३० डालर के गेहूं पैदा हुए, जिनमें से लगभग १७५ डालर के तो भिन्न भिन्न आवश्यकताओं, जैसे बीज मोल लेने, लालटेन को मरम्मत और शिक्षक के एक मकान बनाने में लगे। ५० डालर के लगभग बच रहे जो पाठशाला की दूसरी आवश्यकताओं के लिए छोड़े गये।

दूसरा उदाहरण खुली हवा के थियेटर का है जो सबसे पहिले एक शिक्षक ने ही इस पाठशाला का काम दिखाने के लिये आरंभ किया। यह शिक्षा विभाग के अधिकारियों को बहुत पसन्द आया और अब लगभग आधी से अधिक पाठशालाओं में यह चीज़ प्रचलित हो गई है। और लोगों को स्वास्थ्य सफाई और आर्थिक समस्याओं से सम्बन्धित बातें बतलाने में और साथ ही साथ

मनोविनोद का भी एक बड़ा साधन बन गई हैं।

कभी कभी यही सामाजिक कार्यक्रम देश भर के सुधार का साधन बन जाते हैं। आजकल मदिरापान और अन्य नशीली वस्तुओं के विरोध में एक आन्दोलन चल रहा है। यह कार्य भी सब से पहिले एक अध्यापक ने ही अपने क्षेत्र में उठाया था, जहां उसकी बड़ी आवश्यकता प्रतीत हुई थी। अब दूसरी पाठशालाओं के अनुसरण और स्वास्थ्य विभाग के ध्यान से यह एक राष्ट्रीय समस्या बन गई है। एक अध्यापक ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ५ जलसे किये और उनमें नशा पैदा करने वाली वस्तुओं के विरोध में प्रभावशाली व्याख्यान दिये और बताया कि इन वस्तुओं की अपेक्षा मनोविनोद के त्यौहार मनाये जा सकते हैं। तब से यह आदत एक बड़ी सीमा तक छूट गई है।

इन पाठशालाओं का ध्येय समाज-सुधार और उनकी सेवा ही है और बहुत सी समस्याएं इन सब में एक ही प्रकार की हैं, इसलिए इन पाठशालाओं के कार्यों में बहुत सीमा तक समानता और एकता पाई जाती है। हाँ, पाठशाला मे एक खेल का मैदान होता है जो बस्ती के लिये मनोविनोद का भी केन्द्र बन जाता है।

हर पाठशाला मे गायन, नाटक और खेल कूद भी सिखाये जाते हैं—हर पाठशाला में एक छोटा सा कार्यगृह (workshop) भी होता है। स्वास्थ्य, सफाई की शिक्षा, कला, उद्योग तथा हाथ का काम सभी पाठशालाओं मे सिखाया जाता है। सभी पाठशालाओं में दवा का एक संदूक भी होता है जिसमें प्रचलित बीमा-

रियों की दवाएँ तथा चेचक के टीके लगाने का सामान होता है। एक अध्यापक का कहना है कि "मैं ने खेल-कूद के द्वारा मनुष्यों में एक प्रकार का मेलजोल उत्पन्न कर दिया है—ये लोग पहिले छोटी २ बातों पर झगड़ा किया करते थे। मैं ने एक चलता-फिरता क्लब बनाया है जो स्थान स्थान पर भ्रमण करता है। मैं स्वयं लोगों के घरों पर जाता हूँ और उन्हें साफ़-सुथरा रहने की शिक्षा देता हूं। मेरी एक सहकारिणी अध्यापिका औरतों से मिलती है और छोटे बच्चों को स्वास्थ्य और शारीरिक विकास के सम्बन्ध में उनसे बात चीत करती है।" पाठशाला से सम्बन्धित अन्य दूसरे कामों के विषय में उसी अध्यापक का कहना है कि "पाठ-शाला का आँगन बिल्कुल बिगड़ गया था, मैंने उसे ठीक किया। दो दरवाज़े टूट गये थे, उनकी मरम्मत की और जिनमें शीशे न थे उनमें शीशे लगाये।" साधारण शिक्षा के सम्बन्ध में एक अध्यापक का कहना है कि "यहां के बच्चे अपने मुख से विचार प्रगट करने में, शान्त अध्ययन, भोजन, गायन और नाटक में बड़े ही चतुर होते हैं। वे हर प्रकार के पत्र, सन्देश, व निमन्त्रण-पत्रादि सब कुछ लिख सकते हैं।" गणित के सम्बन्ध में वह लिखता है कि बच्चे प्रतिदिन के जीवन से सम्बन्धित क्रियात्मक (Practical) प्रश्न करते हैं जो अधिकांश उनके बागीचे के कार्यों और वस्तुएँ आदि के खरीदने और बेचने से सम्बन्ध रखते हैं।

साधारण सामाजिक कार्यों के सम्बन्ध में वह लिखता है कि

"मैं इतिहास, भूगोल व नागरिकता की आवश्यक शिक्षाएँ देता हूँ और इन सब की सहायता से इनमे सहयोग और सेवा की भावना उत्पन्न करने की चेष्टा करता हूं।" उदाहरण के लिये एक और पाठशाला के विषय में सुनिये, जिसने अपने सामाजिक जीवन में एक क्रांति उत्पन्न करदी है। यह पाठशाला मेक्सिको की एक रियासत टैक्सकला में स्थापित है। इसके संचालक "रोमन एटेजा" ने १९२९ मे इसका काम अपने हाथ मे लिया। उनका कहना है कि "कुछ दिनों तक तो इस बस्ती के लोगों ने पाठशाला के काम की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया—जिससे मुझे बहुत से कष्ट उठाने पड़े किन्तु मैं ने साहस नहीं छोड़ा और अपने कार्य में निरन्तर लगा रहा। वर्ष के अन्त में मुझे कुछ आशा बँधी कि संभवतः बस्ती के लोग अब ध्यान दे और यह आशा पूर्ण हुई। जब मैंने पाठशाला मे काम आरम्भ किया उस समय बच्चे धरती पर, पत्थरों पर बैठते थे, जो उन्हीं के लिये जुटाये जाते थे किन्तु आज उनके बैठने का ढंग बिल्कुल बदल गया है। हमारे पास यद्यपि आधुनिक ढँग के उच्च कोटि की बैठने की चीजें तो नहीं हैं तथापि बहुत स्वच्छ और लाभदायक अवश्य हैं—और ये सब उनकी अपनी बनाई हुई या बस्ती की सहायता से तैयार की गई है। यद्यपि इनमें कुछ मेरी सहायता भी सम्मिलित है परन्तु यह सब बस्ती के छोटे बड़े लोगों की सहायता से तैयार हुआ है। इसके अतिरिक्त इस पाठशाला में एक स्वास्थ्य और सफाई का विभाग है—एक पुस्तकालय है और चित्र छापने के लिये एक

अन्धेरा कमरा (Dark Room) है। एक मुर्गी खाना है, एक खरगोश-घर है। एक बागीचा, एक खेल का मैदान, एक खुली हवा का थियेटर और एक बड़ा क्षेत्र कृषि के लिये है। इन विभागों की सहायता से पाठशाला के जीवन में बड़ी चहल-पहल रहती है और पाठशाला का अपनी बस्ती से गहरा सम्बन्ध भी स्थापित हो गया है। इस पाठशाला में कुल २ अध्यापक और ८० के लगभग विद्यार्थी हैं—इन बच्चों को उनकी योग्यता के अनुसार चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है। पाठशाला का प्रयत्न यह है कि श्रेणियां छः हो जायें ताकि इस बस्ती के और बच्चे भी दूसरी जगहों की अपेक्षा शिक्षा में किसी भी प्रकार से पीछे न रहें। अभी बस्ती में बहुत से बच्चे इधर-उधर फिरते हैं, यदि एक दो अध्यापक और हो जायें तो बच्चों की संख्या में वृद्धि हो सकती है।"

मेक्सिको की ये ग्रामीण पाठशालाएं बच्चों व प्रौढ़ों दोनों के लिये ही होती हैं। इनसे बड़े और छोटे दोनों समान लाभ उठाते हैं। कभी कभी इन पाठशालाओं में प्रौढ़ों की संख्या ५० तक पहुंच जाती है। यद्यपि यह ठीक है कि इनकी उपस्थिति ऐसी नहीं होती जैसी होनी चाहिये। इसका कारण यह है कि वे अपने काम काज से विवश हैं तथापि जब उन्हें अवकाश मिलता है, वे रुचि पूर्वक आते हैं और भिन्न २ विषयों की शिक्षा ग्रहण करते हैं। कुछेक को पढ़ने की रुचि होती है, कुछ को लिखने की। कोई उद्योग सीखना चाहता है तो कोई खेती बाड़ी। स्त्रियां गृह-शास्त्र से सम्बन्धित विषय सीखना चाहती हैं, जैसे खाना बनाना,

सीना पिरोना इत्यादि। इनके अतिरिक्त वे थोड़ा गाने बजाने से भी प्रेम रखती हैं—इसलिये कि वे उन्हें पसन्द हैं।

पाठशाला का एक महान् कार्य ग्राम सुधार और व्यवस्था भी है जो पाठशाला के साधारण कार्यों की पूर्ति व पुष्टि करता है। एक अध्यापक का कहना है कि "जब मैं एक बस्ती में आया तो वहां के निवासियों में बड़ा मतभेद पाया परन्तु कुछ समय के निरन्तर प्रयत्नों के फलस्वरूप लोगों में परस्पर मेल-जोल हो गया, वे न केवल परस्पर एक दूसरे के विरोधी थे बल्कि उन्हें मेरे कार्य से भी द्वेष था। परन्तु थोड़े समय के पश्चात् प्रत्येक मनुष्य मुझे सहायता देने को तत्पर हो गया और पाठशाला का सच्चा सहयोगी और उपकारी बन गया। पहिले जब पाठशाला की सभा या अन्य समितियों का चुनाव होता था तो हर मनुष्य दूर भागता और इस कार्य को व्यर्थ समझता था और कोई किसी प्रकार का उत्तरदायित्व लेने को तैयार न होता था, लेकिन आज जब चुनाव का समय आता है, तो यही नहीं कि हर मनुष्य अपना उत्तरदायित्व स्वयं स्वीकार कर लेते हैं परन्तु इसके लिये सभी दौड़ धूप करने के लिये भी तत्पर रहते हैं। इससे लोगों की, बस्ती की बातों में, उत्सुकता का परिचय मिलता है। कोई आज जाकर देखे तो गलियां साफ सुथरी दिखलाई पड़ेगी। मक्खियों की वह अधिकता न मिलेगी जो पहिले थी। लोग भी साफ सुथरे दृष्टि-गोचर होंगे। टीके के सम्बन्ध में लोगों का अब वह विरोधी दृष्टि-कोण नहीं है जो पहिले था। अब लोग सभी उत्सवों में प्रसन्नता से सम्मिलित

होते हैं और अपने बच्चों को पाठशाला में भेजते हैं। केन्द्रीय सरकार की इन ग्रामीण पाठशालाओं के अतिरिक्त अन्य पाठशालाएं भी हैं, जिनमें इन्हीं के प्रभाव से इस प्रकार के ग्राम सुधार और समाज-सुधार के कार्य होते रहते हैं।

सारांश यह है कि जहां कहीं आप जावेंगे, आप यही देखेंगे कि किस प्रकार ये ग्रामीण पाठशालाएं बालकों और प्रौढ़ों को शिक्षा-सुधार और सेवा के कार्यों में लगाये हुये हैं।

इन पाठशालाओं का एक बड़ा उद्देश्य, राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति है, जिससे इन कार्यों में बड़ी एकता रहती है। उदाहरण के लिये इन पाठशालाओं की कलाओं और उद्योगों के कार्यों को लीजिये। इनका बड़ा प्रयत्न यह होता है कि पुराने ढंग की कला (Art) और प्राचीन आदर्शों को फिर से जीवित किया जावे। इसके साथ ही साथ प्राचीन नृत्य और गायन को भी जीवित करने की कोशिश की जा रही है। यह सम्पूर्ण कार्य एक बड़ी सीमा तक "नागरिकता के प्रचारक" नाम की एक संस्था द्वारा किये जा रहे हैं, जिनका वर्णन अगले परिच्छेद में मिलेगा।

तीसरा परिच्छेद

नागरिकता के प्रचारक

मेक्सिको राज्य ने जब ग्रामों में शिक्षा फैलाने का निर्णय किया तो सबसे पहिले इस उद्देश्य के लिये अच्छे, अच्छे अनुभवी अध्यापकों की बड़ी संख्या में आवश्यकता पड़ी। यह आवश्यकता तीन प्रकार से पूरी की गई। (१) नागरिकता के प्रचारकों के द्वारा (२) नियमित रूप से अध्यापकों की पाठशालाएं खोलकर (३) केन्द्रीय सरकार के निरीक्षण के द्वारा। इन तीनों साधनों में से नागरिकता के प्रचारकों का साधन "अपने ढंग का निराला ही" होने के कारण सबसे अधिक सफल सिद्ध हुआ और इससे बहुत काम लिया गया।

इस साधन से काम लेने की आवश्यकता यों पड़ी कि अब तक जितने लोग अध्यापक का काम करते थे उनकी योग्यता बहुत कम थी, दूसरे उनका अनुभव भी अधूरा था। इसलिये इस बात की आवश्यकता हुई कि उन्हें उनके कामों से अलग किये बिना ही, कोई ऐसा नियम काम में लाया जावे जिससे उनकी योग्यता भी पूरी हो जावे और उनका अनुभव भी बढ़े। फिर यह भी विचार हुआ कि इन अध्यापकों को प्रचलित पुराने ढंग पर शिक्षा दिलाने मे कोई लाभ नहीं है, इसलिये कि वह हमारे राष्ट्रीय उद्देश्य में कोई

सहायता नहीं देती। फिर जितनी बड़ी संख्या में उस समय अध्यापकों की आवश्यकता थी वह किसी शिक्षा पद्धति से भी इस थोड़े समय में पूरी नहीं हो सकती थी—फिर सबसे बड़ा कारण यह और था कि इस नये कार्य के लिये, नये ढंग के अध्यापकों की आवश्यकता थी। अतः नागरिकता के प्रचारकों का यह नया ढंग काम में लाया गया।

नागरिकता के प्रचारकों का एक समूह ऐसा है जो स्थान २ पर भ्रमण करके अध्यापकों को शिक्षा देता है। यह बहुत अच्छे, कार्य कर्त्ताओं की एक टोली होती है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य में प्रवीण होता है। प्रत्येक टोली के पास एक क्षेत्र होता है जो भिन्न २ क्षेत्रों में विभाजित होता है। प्रत्येक केन्द्र पर यह टोली उस क्षेत्र के सब अध्यापकों को एकत्रित करके एक संक्षिप्त 'पाठ्यक्रम' देती है। ये अध्यापक आस पास के गांवों से आकर इस केन्द्र पर जमा होते हैं और सबके सब ही एक ही स्थान पर ठहरते हैं और एक ही साथ भोजन करते हैं। ये अपने बिछौने और बर्तन अपने साथ ही लाते हैं। यह संक्षिप्त 'पाठ्यक्रम' अधिक से अधिक कोई तीन दिन का होता है। और प्रत्येक दिन का कार्यक्रम बहुत व्यस्त होता है। प्रातःकाल ६ बजे से कार्य आरंभ होता है और सायंकाल के ६ बजे तक चलता रहता है।

प्रचारकों की यह टोली चुने हुये व्यक्तियों की होती है जिनमें भिन्न २ काम करने वाले सम्मिलित होते हैं। उदाहरणार्थ—उनमें से एक कृषि और उससे सम्बन्धित कार्यों में प्रवीण होता

है तो दूसरा भांति २ के उद्योगों में चतुर होता है जिनसें मिट्टी का काम, कताई-बुनाई, साबुन बनाना, चमड़े का काम इत्यादि सम्मिलित हैं। एक कला का जानने वाला होता है जिसमें गायन शास्त्र, नाटक, चित्रकला इत्यादि सम्मिलित हैं। एक शारीरिक व्यायाम का विशेषज्ञ होता है जिसके सुपुर्द मनोविनोद और खेल कूद का कार्य होता है। एक या दो नस होती हैं जो साधारण स्वास्थ्य की देख भाल करती हैं। सबके अन्त में एक देहात-सुधार का कार्य जानने वाला होता है जो इनमें सबसे अधिक महत्व रखता है, वह इसलिये कि ये ग्रामीण पाठशालाएं इस क्षेत्र की सामाजिक और आर्थिक सुधारों की केन्द्र होती हैं। गृह कार्यों, बच्चों का पालन-पोषण और देखभाल और गृह-जीवन से सम्बन्ध रखने वाले सभी कार्यों की शिक्षा इस ग्राम सुधारक के सुपुर्द होती है।

इस टोली के कार्य कर्त्ताओं के लिये किसी विशेष शिक्षा अथवा प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं होती किन्तु यह ध्यान अवश्य रखा जाता है कि इनकी योग्यता और ज्ञान कम से कम उन अध्यापकों से अधिक हो, जिन्हे शिक्षा देने के लिये नियुक्त किया गया है। कभी कभी वह साधारण व्यवसायी और व्यापार करने वाले लोगों मे से होते हैं। उनकी योग्यता के सम्बन्ध में यह विचार तो अवश्य रखा जाता है कि वह दूसरे अध्यापकों को अच्छी तरह शिक्षा दे सकें, और इस बात का विशेष रूप से ध्यान रक्खा जाता है कि उनमें दूसरों की सेवा और सुधार की पूरी २ भावना और

योग्यता हो और वह शिक्षा को समाज सुधार और जन साधारण की भलाई का एक प्रभावशाली साधन समझते हैं। इन अध्यापकों पर इस बात का उत्तरदायित्व दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है कि वह मनुष्यों में सामाजिक और आर्थिक जीवन का एक ऊँचा आदर्श स्थापित कर सकें और उनके जीवन को हर प्रकार से और भी अच्छा बना सकें।

प्रचारकों का चुनाव केन्द्रीय सरकार की ओर से होता है। राज्य के केन्द्रीय शिक्षा-विभाग में इसकी एक विशेष शाखा है जो इन प्रचारकों के कार्यों की देख भाल करती है। जब इन प्रचारकों की शिक्षा का पाठ्यक्रम आरम्भ होता है तो उस क्षेत्र के सभी शिक्षक व शिक्षा अधिकारियों को आदेश मिलता है कि वे उनके साथ सम्मिलित हों और फिर अपने २ क्षेत्र में जाकर वे भी उन सिद्धान्तों का प्रचार और उन नियमों का कार्य प्रारंभ कर दें।

१६२७ में केन्द्रीय सरकार की ओर से इन प्रचारकों को शिक्षा देने वालों के लिये ६ सप्ताह का एकपाठ्यक्रम दिया गया। उनके लिये जिन विषयों में शिक्षण का प्रबन्ध था, वे ये थे :—

(१) पाठशाला का प्रबन्ध

(२) शिक्षा के सिद्धान्त (ग्रामीण और नागरिक दोनों प्रकार की शिक्षा के लिये)

(३) मनोविज्ञान (शिक्षा का)

(४) शिक्षण के नियम

(५) स्वास्थ्य रक्षा और सफाई

(६) ग्रामीण अर्थशास्त्र और

(७) बालकों का साहित्य

गृहशास्त्र की शिक्षा से सम्बन्धित पाठ्य-क्रम में ये विषय सम्मिलित थे :—

(१) बालकों के खाने की वस्तुएँ एवं उनका पालन-पोषण

(२) कपड़े बनाना

(३) स्वास्थ्य और सफाई और

(४) ग्रामीण अर्थशास्त्र

इस प्रकार जो लोग शारीरिक अनुभव से रुचि रखते थे उनके लिये पाठ्य-क्रम में ये-ये विषय थे।

(१) खेल कूद और व्यायाम

(२) शारीरिक सुधार

(३) व्यायाम

(४) शरीर-शास्त्र व स्वास्थ्य रक्षा और

(५) खेलों की व्यवस्था

जो अध्यापक कृषि की शिक्षा से सम्बन्ध रखते थे उनके लिये ये विषय थे :—

(१) कृषि सम्बन्धी संस्थाएँ

(२) ग्रामीण ऋण

(३) गृह-कला कौशल और

(४) ग्रामीण अर्थशास्त्र जैसे विषय विशेष रूप से रक्खे गये हैं।

गृह सम्बन्धी, कला कौशल से सम्बन्धित, मनुष्यों के लिये इन विषयों की नैतिक व क्रियात्मक (Practical) शिक्षा अनिवार्य थी —

(१) साबुन बनाना (२) चमड़ा सिझाना (३) फल और शाक आदि सुखाना (४) भिन्न भिन्न प्रकार के उद्योग और (५) गौशाला।

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, इन टोलियों के क्षेत्र नियुक्त होते हैं और नियमानुसार प्रत्येक क्षेत्र में कम से कम प्रत्येक वर्ष एक पाठ्यक्रम होना आवश्यक है। एक क्षेत्र में लगभग १०० वर्ग मील होते हैं। यह क्षेत्र जनसंख्या और भौगोलिक अवस्था के अनुसार छोटे बड़े भी होते हैं। इन क्षेत्रों में टोलियों को आज्ञा होती है कि वे कम से कम १० पाठ्यक्रम वर्ष भर में पूर्ण करें।

१९३१ में ऐसी भ्रमण करने वाली टोलियां १२ थीं और २ स्थिर रहने वाली भी थीं और उन्होंने मेक्सिको के लगभग सभी देश को छान डाला था। यद्यपि यह संख्या पर्याप्त नहीं है तथापि आर्थिक दशा सुधारने के साथ साथ इनकी संख्या भी बढ़ती जावेगी।

इन टोलियों और उनके कार्य का केन्द्रीय शिक्षा विभाग के साथ गहरा सम्बन्ध होता है। विभाग की ओर से कार्य प्रणाली के सम्बन्ध में समय समय पर आदेश प्रकाशित होते रहते हैं, उदाहरणार्थ एक पाठ्यक्रम देने के समय जो आदेश केन्द्रीय शिक्षा

विभाग की ओर से आये थे उनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :—

ग्रामसुधार का कार्य करने वालो के लिये आदेश

(१) अध्यापकों के साथ काम करने के लिये :—

१—स्वास्थ्य रक्षा से सम्बन्धित एक संक्षिप्त पाठ्यक्रम जिसमें साधारण मरहम पट्टी और साधारण बीमारियों की रोक थाम।

२—खाद्य पदार्थों के सिद्धांत से सम्बन्धित, जिसमें सतौल-भोजन (Balanced diet), भोजन पकाने के ढंग और कुछ पदार्थ बनाने के नियम भी हैं।

३—बच्चों के पालन-पोषण से सम्बन्धित।

४—सीने-पिरोने और इसी प्रकार के अन्य कार्यों से सम्बन्धित।

५—कुछ ऐसे विषयों की योजना जिसमें बस्ती के लोगों को काम करने का ढग मालूम हो सके, जैसे, लोगों का संगठन, एक साथ लाभप्रद कार्य, घरों की मरम्मत और सुधार इत्यादि।

(२) बस्ती मे कार्य करने के लिये :—

१—स्वास्थ्य व सफाई, बीमारी की रोक थाम, मामूली मर-हम पट्टी तथा टीके आदि के सम्बन्ध मे बातचीत।

२—गृहकार्य, जैसे खाना बनाना, सीना-पिरोना आदि।

३—बच्चों का पालन-पोषण और देख-भाल।

४—घरों मे जाना और उनका सुधार करना।

५—उत्सव व मनोविनोद की वस्तुएं, जैसे, सैर, सपाटे आदि।

६—वस्ती के लिये लोगों का संगठन और उनके लिये मनोविनोद और भिन्न २ प्रकार की संस्थाएँ वनाना।

(३) पाठशालाओं के वचों में काम करने के लिये :—

१—टीके की आवश्यकता और उनका लगवाना।

२—स्वास्थ्य और सफाई और गृहकार्य की शिक्षा।

घरेलू दस्तकारियों के अध्यापकों के लिये आदेश

(४) अध्यापकों और वस्ती के लोगों में काम करने वालों के लिये:—

१—चमड़े का काम सिखाना और उसे खराब होने से वचाना, फल और शाक का सुखाना, सावुन वनाना, पाठशालाओं की दस्तकारियों और गौशाला का काम।

२—दस्तकारी और उद्योग के कामों के आदर्श स्थापित करना।

३—वस्ती वालों के लिये भिन्न २ उद्योगों के सिखाने की व्यवस्था, उनकी कठिनाइयों और उनकी अन्य समस्याओं का निवारण करना।

कृषि सिखाने वाले अध्यापकों के नाम आदेश

यह कार्य अधिकतर क्रियात्मक (Practical) होना चाहिए, जिसमें जानवरों की अच्छी नस्ल उत्पन्न करना, मधु मक्खियां पालना, शाक वोना, फूल और फलों के वाग लगाना है। इस पाठ्यक्रम में अध्यापक और विद्यार्थी दोनों सम्मिलित होंगे। विशेष रूप से देखने के लिये (Observation) वस्ती में इन कार्यों के कुछ नमूने भी रखने चाहियें और सम्पूर्ण शिक्षा क्रियात्मक

रूप से दी जानी चाहिये और सब काम मिल जुल कर होने चाहियें।

शारीरिक शिक्षण के अध्यापकों के लिये आदेश

(१) अध्यापकों की शिक्षा के सम्बन्ध में :—

१—खेल-कूद और शारीरिक व्यायाम।

२—खेल-कूद, पाठशाला में प्रारम्भ करने के विचार से।

३—शारीरिक स्पर्धा (Competition)

(२) बच्चों के साथ काम करने के सम्बन्ध में :—

१—ऐसे खेल-कूद तथा शारीरिक स्पर्धाएँ जिनसे कोई शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्य की पूर्ति होती है।

२—अध्यापकों के आदर्श के विषय।

(३) आसपास के क्षेत्र में काम करने के सम्बन्ध में :—

१—पुरुषों में   २—स्त्रियों में

इस क्षेत्र को छोड़ने से पहिले एक मनोविनोद की संस्था और एक खेल-कूद के लिये मैदान अवश्य छोड़ा जाना चाहिये।

इन टोलियों की स्थापना के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार ने इनके उद्देश्य की व्याख्या जिन शब्दों में की है वह इस प्रकार है:-

"यदि हमको केवल सिद्धांतों द्वारा संस्थाओं को समझाना होता और उनसे सम्बन्धित साधारण शिक्षा ही देनी होती तो हमारे लिये यह उचित था कि इस प्रकार के पाठ्यक्रम हम नगरों और जनसंख्या के बड़े २ केन्द्रों में देते और अध्यापकों के पास भेजते, किन्तु हमारे उद्देश्य की पूर्ति उससे नहीं होती। हम

चाहते यह हैं कि ये टोलियां स्वयं उन अध्यापकों के पास जावें और उन परिस्थितियों के बीच, जिनमें कि ग्रामों में अध्यापकों को कार्य करना पड़ता है, शिक्षा दें। साथ ही साथ वे स्वयं भी उन परिस्थितियों और समस्याओं का, जो वहां से सम्बन्ध रखती हैं, अध्ययन करें।" इस आधार पर उदाहरण और अन्य सिद्धांतों का विचार करना व्यर्थ है। प्रत्येक गांव में एक पाठशाला आवश्यक वस्तुओं सहित होती है।

इस टोली का कार्य इन वस्तुओं की सहायता से इस पाठशाला को ऐसा बनाना है कि वह ग्राम्य की एक लाभदायक संस्था बन सके। यही कारण है कि पाठशाला इस टोली के लिये एक 'प्रयोगशाला' बन जाती है।

१६२३ में यह काम प्रचारकों की एक टोली द्वारा आरम्भ हुआ और उसी समय से इनकी संख्या और कार्य में दिन-प्रति दिन वृद्धि ही होती गई।

थोड़े दिनों के पश्चात् यह मालूम हुआ कि इस प्रणाली से ग्राम-वासियों को बहुत लाभ पहुंच रहा है। जब पहिले पहल इस टोली का काम अध्यापकों की शिक्षा से आरम्भ हुआ तो बस्ती के लोगों ने टोली के कृषि-कला और गृह कार्यों में बहुत रुचि दिखलाई। बस्ती वालों के लिये इस टोली के काम का अधिक से अधिक क्रियात्मक बनाने का प्रयत्न किया गया और शीघ्र ही यह प्रतीत होने लगा कि लोगों में केन्द्रीय सरकार के इस शिक्षा सम्बन्धी कार्य क्रम से रुचि बढ़ती ही जा रहा है और प्रचारकों

की यह टोली वस्ती के लोगों की सामाजिक और नैतिक साधनों का पता लगा रही है, जो केवल अध्यापक अकेला नहीं कर सकता था।

इस टोली को अपने सम्पूर्ण साधन केन्द्रीय सरकार के सामने रखने पड़ते थे, ताकि यहाँ उनसे प्रतिवर्ष पाठशालाओं के कार्यो को और भी अच्छा बनाने में सहायता ली जा सके।

केन्द्रीय सरकार की वर्तमान नीति यह रही है कि वह गांव और पाठशाला दोनों को इस टोली की प्रयोगशाला के रूप मे काम में लाने के अवसर प्रदान करे ताकि यहाँ की परिस्थितियों के सन्मुख ऐसे प्रमाण निकाले जा सकें जो साधारण रूप से काम मे लाये जा सकें। उनसे यह भी आशा की जाती है कि वह वस्ती के अंदर अपनी कोई स्थायी स्मृति छोड़ जावेंगे जैसे शाक का बागीचा, खेल का मैदान, सैर का स्थान, खुली हवा का थियेटर, स्वास्थ्य व सफाई की सुंदर व्यवस्था आदि।

वस्ती के इन्हीं कार्यो की पूर्ति के लिये प्रचारकों की यह टोली जब कार्य आरभ करने के लिये आती है, तो समय से कुछ पूर्व ही आती है ताकि वह उस वस्ती के लोगों से परिचित हो कर इस प्रकार के सुधार सम्बन्धी कार्यो की एक योजना बनाले।

पाठ्यक्रम के अन्त मे जब टोली का कार्य पूरा हो जाता है तो अंतिम दिन एक बड़ा समारोह मनाया जाता है जिस में वस्ती के सभी लोग और वे सभी पाठशालाएँ सम्मिलित होती हैं, जिन के अध्यापक इस पाठ्यक्रम मे भाग लेने आते हैं। 'तूला' मे जो

मेक्सिको का एक प्रचीन बड़ा नगर है इस टोली ने एक वर्ष अपना कार्य आरंभ किया। पाठ्यक्रम के अंत में, जिसमें लेखक को भी भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, संपूर्ण बस्ती में एक बड़ी चहल-पहल और शोभा थी। मकानों पर झंडिया लगाई गई थीं। सड़कों और बाज़ारों में लोगों के आने जाने से एक मेला सा मालूम होता था। स्त्री पुरुष दोनों पाठ्यक्रम के अंत में समारोह में भाग लेने और भिन्न भिन्न वस्तुओं की प्रदर्शनी देखने के लिये आ-जा रहे थे।

इस पाठ्यक्रम की अवधि में स्वयं प्रचारकों की टोली ने भी आदर्श के रूप में बहुत सा सामान बनाया था जो पाठशाला के अध्यापकों को अगले वर्ष अपनी अपनी पाठशालाओं में तैयार करवाना था। प्रदर्शनी की वस्तुओं में उनके बागीचे की शाक सब्जी, फल आदि और कला के सामान में मेज-कुर्सी, टोकरी और अन्यान्य काम में आने वाली अनेक वस्तुएँ थीं। सामान तैयार करने के अतिरिक्त भांति २ के खेल कूद, मनोविनोद की वस्तुएँ भी थीं, जैसे व्यायाम की स्पर्धा, नाटक, गायन, ग्रामीण नाच आदि, जिसमें बस्ती के लोगों ने बड़े उत्साह से काम लिया। उनका उद्देश्य भी यही था कि ये अध्यापक इन वस्तुओं को देखकर फिर अपनी पाठशाला में जाकर उन्हें आरंभ करवाये। 'तूला' के इस पाठ्यक्रम का संक्षिप्त चित्र 'डाइरेक्टर शिक्षा विभाग' ने स्वय इन शब्दों में खींचा है।

"तूला मेक्सिको नगर से थोड़ी दूर पर स्थित है। यहाँ एक

टोली आज कल कार्य कर रही है—इसने अपना कार्य ५ जुलाई से आरंभ किया है जो ३ अगस्त को समाप्त होगा। इस टोली में जो लोग सम्मिलित हैं उनमे एक तो ग्राम सुधार का कार्य जानने वाला है, दूसरा कृषि के काम मे चतुर है। एक ग्रामीण कला कौशल का विशेषज्ञ है तो दूसरा शारीरिक शिक्षण का ज्ञाता है। एक गायक है तो दूसरा 'कला और उद्योग' का शिक्षक और एक इस टोली का नायक है।

ये लोग इन चार सप्ताह मे एक पाठ्यक्रम देंगे जो इस सम्पूर्ण बस्ती के सुधार और उन्नति का साधन होगा। वे सभी अध्यापक जो आस पास की पाठशालाओं से आये है इस टोली के साथ मिलकर कार्य करेंगे और इस समय में वे इन सभी समस्याओं का समाधान सोचेंगे, जो समय २ पर उनके सामने आती रहती है। वे अपनी शिक्षा योजना को और भी सफल बनाने के लिये इनसे नई सामग्री प्राप्त करेंगे। वे क्रियात्मक कार्यों के द्वारा ये बात सीखेंगे कि लोगों मे प्रगति की भावना और जागृति का ज्ञान किस प्रकार उत्पन्न किया जा सकता है, जिससे वे अपनी बस्ती की अवस्था सुधार सकें। ये अध्यापक जो इनके साथ मिलकर काम करेंगे, शिक्षा के नवीन सिद्धान्त और शिक्षण व संगठन के नये २ ढग सीखेंगे। साथ ही साथ यह भी सीखेंगे कि वे अपनी पाठशालाओं को बस्ती के लोगों की सेवा का केन्द्र कैसे बना सकते है। वे भांति भांति के 'उद्योग और कलाएँ' भी सीख जायेंगे और इसी के साथ ये भी सीखेंगे

कि अपने अपने क्षेत्र की स्थायी कारीगरी और कला को किस प्रकार उन्नत किया जा सकता है।

तूला में यह टोली बड़ी अच्छी तरह कार्य कर रही है। प्रत्येक मनुष्य वहाँ जा कर देख सकता है कि ये लोग उन अध्यापकों की योग्यता और सामाजिक अवस्था को ठीक करने के लिये क्या क्या कर रहे हैं। ये बातें यदि न की जातीं तो हमारे गांवों के अध्यापक उसी पुरानी लकीर के फकीर बने रहते जिसमें न तो कोई उपज है और न कोई साहस और न वे किसी कार्य के लिये समर्थ ही होते।"

इन यात्रा करने वाली टोलियों के अतिरिक्त दो अन्य स्थायी टोलियां भी हैं जिन में से एक एक्टोपान (Actopan) में कार्य कर रही है जो मेक्सिको नगर से कुछ ही मीलों की दूरी पर है—और दूसरी पैराशो (Paracho) में जो कुछ और अधिक दूरी पर है।

ये टोलियां अध्यापक, विद्यार्थी और बस्ती के प्रौढ़ों के साथ मिलकर काम कर रही हैं और इनका काम शिक्षा से सम्बन्धित सभी आवश्यक जानकारी प्राप्त करना और ऐसे कार्यक्रम बनाना है जिनसे बस्ती के लोगों की सामाजिक और आर्थिक अवस्था में सुधार हो सके। इनका संक्षिप्त वृत्तान्त नीचे लिखा जाता है।

"एक्टोपान की टोली ने अपने काम के तीन वर्ष पूरे कर लिये हैं। इस टोली में एक कृषि और एक 'कला और उद्योग'

का विशेपज्ञ है। इनके अतिरिक्त एक शारीरिक शिक्षण का ज्ञाता है, एक दो नर्सें, एक मनोविनोद की योजना को चलाने वाला और एक ग्राम सुधार का काम जानने वाला है। टोली के लोग आस पास के गांवों में जाते हैं और अपनी अवस्था सुधारने के लिये लोगों को प्रेरित करते हैं। इस क्षेत्र के लोग वहुत ही निर्धन और अशिक्षित एवं पिछड़े हुये हैं और दुर्भाग्य से अब तक इन पर सबसे कम ध्यान दिया गया है। यद्यपि इनमे उन्नति की वहुत अधिक संभावना है। इस टोली ने थोड़े ही दिनों के कार्य से इनमें एक क्रांति उत्पन्न कर दी है। लोग अब अधिक अच्छी अवस्था में रहने लगे हैं। इनमें सामाजिक व नैतिक गुणों के अतिरिक्त यह बात भी उत्पन्न हो गई है कि वे अपनी भूमि से अधिक से अधिक उपज प्राप्त कर सकें। इनके निर्धनता के सताये हुये मुखों पर, जो सदियों से ऐसे ही चले आ रहे थे, अब सन्तोप और प्रसन्नता की झलक दिखलाई पड़ती है। ये सब कुछ उस टोली के प्रयत्नों के फल स्वरूप हैं जो धार्मिक प्रचारकों की भांति स्फूर्ति से काम कर रही है, और जिसने कम से कम इनके सांसारिक जीवन को इतना ऊँचा कर दिया है।

इन प्रचारकों की टोलियों के अतिरिक्त दो अन्य खोज करने वाली टोलियाँ भी हैं जो कार्य कर रही हैं। इन में से एक तो वहाँ के हिन्दियों की रीति-रिवाज, उनकी भाषा, उनके स्वभाव और ढंग आदि के सम्बन्ध मे खोज कर रही है और दूसरी गाँव की अवस्था का अध्ययन कर रही है और जिस का कार्य क्षेत्र अभी

तक ओटोमी (Otomii) जाति के हिन्दियों तक ही सीमित है—जो देश के बड़े भाग में फैले हुये हैं—इन दोनों टोलियों के कार्य से यह आशा है कि गांव की शिक्षा का एक स्थायी शास्त्र और काम करने के वैज्ञानिक ढंग और सिद्धान्त हाथ आजावेंगे। अब तक इस देश में ग्रामीण शिक्षा का प्रयोग केवल विचारों के आधार पर किया जा रहा है परन्तु अब यह बहुत दृढ़ आधार पर काम में लाया जावेगा।

इन खोज और प्रयोगों से जो इन टोलियों द्वारा पूर्ति को पहुंच रहे हैं ग्रामीण शिक्षा की नींव अत्यंत वैज्ञानिक नियमों पर स्थापित हो जावेंगी और यह अन्धे के हाथ की बटेर न रहेगी।

ये प्रचारकों की टोलियां जिनका वर्णन कुछ विस्तार से ऊपर किया गया है वास्तव में केन्द्रीय सरकार के ग्रामीण शिक्षा संठगन की जान हैं। इनका सबसे पहिला काम तो यह है कि इन अध्यापकों को नवीन ढंग और सिद्धान्तों की शिक्षा दें जो नौकर हैं और इसलिये वे देश के सभी अध्यापकों को कम से कम वर्ष में एक बार अपने क्षेत्र से पास ही किसी केन्द्र में एकत्रित करती हैं और वहाँ उन्हें एक अच्छे ढङ्ग की क्रियात्मक (Practical) शिक्षा देती हैं जो अपने वातावरण के अनुसार उनसे निकट सम्बन्ध रखती हैं।

यह शिक्षा साधारण शिक्षा की भांति केवल सिद्धान्त रूपी नहीं होती अपितु कार्यावलोकन और क्रियात्मक प्रयोगों पर आधारित होती है।

इस क्रियात्मक शिक्षा के अतिरिक्त इन अध्यापकों को यह भी सिखाया जाता है कि वे किस प्रकार 'शिक्षा और समाज' के बीच गहरा सम्बन्ध और नाता उत्पन्न कर सकते हैं। इस प्रकार वे न केवल 'शिक्षा और समाज' के बीच गहरा सम्बन्ध स्थापित करते हैं अपितु अध्यापक वर्ग में भी एक भ्रातृ-भाव उत्पन्न कर देते हैं। वे एक ओर केन्द्रीय सरकार के उद्देश्यों को बस्ती के लोगों तक पहुंचाते हैं और उसी के साथ साथ दूसरी ओर बस्ती का हित और आवश्यकता भी केन्द्रीय सरकार पर प्रगट करते हैं। इस प्रकार ये टोलियाँ, विशेषतः वे जो स्थायी रूप से कार्य करती हैं. इस देश के अन्दर शिक्षा की योजना को अत्यन्त दृढ़ और शक्तिशाली आधारों पर स्थापित करने में बड़ी सहायता दे रही हैं।

चौथा परिच्छेद

अध्यापकों की पाठशालाएँ

मैक्सिको में जब ग्रामीण शिक्षा का काम शुरू हुआ तो उस समय इस काम के करने वालों ने यह विचार सामने नहीं रखा कि इन नई ग्रामीण पाठशालाओं के लिये नये अध्यापकों की भी आवश्यकता होगी। चूंकि ग्रामीण शिक्षा का यह कार्यक्रम अपने स्थान पर बिल्कुल नया था और उसके अपने विशेष उद्देश्य थे इसलिये पुराने अध्यापकों से काम चलाना कठिन था। इन नई पाठशालाओं की अवस्था भी एक प्रयोगशाला की सी थी और इनके सिद्धान्त और नियम पर। उसी सीमा तक कार्य हो सकता था, जहां तक कि वे कार्य रूप में परिणित हो सकें। उनके सामने किसी प्रकार का कोई उदाहरण या नमूना नहीं था और जहां तक अध्यापकों की शिक्षा का सम्बन्ध है कोई पाठ्यक्रम और सामग्री भी मौजूद नहीं थी लेकिन एक बात अपने स्थान पर अवश्य थी और वह यह कि नई शिक्षा का प्रोग्राम और उनके उद्देश्यों पर उन्हें पूर्ण विश्वास था। ऐसे मनुष्य सरलतापूर्वक मिल सकते थे जो इससे पूरे सहमत हों और जो सहानुभूति के साथ इस प्रोग्राम को चलाने के लिये तैयार हों। ऐसी अवस्था में यह निर्णय हुआ कि ऐसे मनुष्यों के संरक्षण में पाठशालाएँ खोल दी जावें और

शिक्षा (Training) का प्रतिबन्ध उस समय तक के लिये उठा दिया जाय, जब तक यह प्रयोग किसी सीमा तक सफल न हो जाये। अतः ग्रामीण शिक्षा के डाइरेक्टर ने अपने एक व्याख्यान में बड़े विस्तार से कहा—"जब हमे यह बात मालूम हो गई है कि हमारे अध्यापकों को क्या करना है उस समय हमने अध्यापकों की शिक्षा के लिये पाठशालाएँ खोलीं। इन पाठशालाओं का उद्देश्य यह था कि वे (१) बच्चों को लिखना पढ़ना सिखायें (२) प्रौढ़ों को स्वास्थ्य और सफाई के साथ रहने-सहने और अच्छा जीवन व्यतीत करने के नियम बतावें (३) बस्ती के साधारण मनुष्यों का सामाजिक और आर्थिक जीवन संगठित करें।" इसलिये इस बात से साफ प्रतीत होता है कि अध्यापकों के लिये पाठशालाएँ उस समय स्थापित करने की आवश्यकता पड़ी, जब उन्हें यह मालूम हुआ कि किस प्रकार के अध्यापकों की आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में जब ग्रामीण पाठशालाएँ स्थापित हो गईं, उनका काम अच्छी तरह चलने लगा। उस समय अध्यापकों की पाठशालाएँ खुलीं।

अध्यापकों की शिक्षा के ये तीन उद्देश्य जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है एक क्रियात्मक और रचनात्मक प्रयोग के बाद प्राप्त हुए हैं और जिस समय से कि अध्यापिकाओं की शिक्षा का काम आरम्भ हुआ इन तीनों उद्देश्यों पर बराबर जोर दिया जाता रहा है और ये तीन उद्देश्य सदैव अध्यापिकाओ की पाठशालाओ के सामने रहे हैं। जो प्रयोग बच्चों की ग्रामीण पाठशालाओं मे

ओर से प्रवेश सम्बन्धी जो नियम रक्खे गये हैं, वे ये हैं—"इन पाठशालाओं में दो प्रकार के विद्यार्थी होंगे, एक स्थाई और दूसरे अस्थायी। दोनों परिस्थितियों में विद्यार्थियों का प्रवेश उस बस्ती के लोगों मे से होगा जिनमें वे पाठशालाएं स्थापित हैं। छात्रवृत्ति देते समय निर्धन श्रेणी के विद्यार्थियों का विशेष ध्यान रक्खा जावेगा। विद्यार्थियों का चुनाव निम्न नियमों के आधीन होगा (१) कम से कम शिक्षा प्राइमरी पाठशाला तक होनी चाहिये जिसका प्रमाणपत्र उसके पास होना आवश्यक है, नहीं तो प्रवेश के समय उन्हें एक परीक्षा देनी होगी। (२) बालकों की आयु १५ वर्ष से अधिक और बालिकाओं की आयु १४ वर्ष होना आवश्यक है। (३) विद्यार्थियों को यह समझना चाहिये कि अध्यापक का कार्य उसके जीवन का स्थायी कार्य होगा। (४) उनका स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिये और उनके अन्दर ऐसी बीमारियां या अवगुण न हों जिनसे वे बस्ती की सेवा करने के योग्य न हों। (५) उनका चरित्र बहुत अच्छा होना चाहिये।"

पाठ्यक्रम :—

अध्यापकों की पाठशाला का पाठ्यक्रम दो विभागों से मिलकर बनता है। एक प्रारम्भिक शिक्षा का विभाग, ग्रामीण अध्यापकों का विभाग। यह पाठ्यक्रम इस प्रकार बनाया जाता है कि भिन्न २ पाठशालाओं को भी अपनी आवश्यकता और वातावरण के अनुसार इसमें आवश्यक परिवर्तन करने का अवसर प्राप्त होता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य यह है कि जिन उद्देश्यों का

उल्लेख उपर्युक्त किया गया है वे साधारण विषयों की शिक्षा, उनके सिखाने के नियम, कृषि उद्योग की शिक्षा, ग्राम सुधार और संगठन के कार्यों से पूरी हो सके। छात्राओं को गृह कार्य और इसी प्रकार की दूसरी चीजों की शिक्षा दी जाती है ताकि वे घरेलू जीवन को सुधार सकें।

इन पाठशालाओं मे दो प्रकार के पाठ्यक्रम चलते है। एक दो साल का और दूसरा तीन साल का। दोनों में अन्तर केवल विद्यार्थियों की योग्यता के आधार पर रक्खा जाता है। प्रवेश इस नियम में कि प्रार्थी किसी और प्रकार से प्रवेश किये जाने के योग्य है तो उसे प्रवेश कर लेने दिया जाता है। पाठशाला का नियमित पाठ्यक्रम दो साल का है और प्रति वर्ष ५-५ मास की दो अवधियों में विभाजित है। पाठ्यक्रम के अन्त पर सफल विद्यार्थियो को केन्द्रीय सरकार की ओर से प्रमाणपत्र मिलता है। इन पाठशालाओं के पाठ्यक्रम का चित्र भी नीचे लिखा जाता है।

पहली अवधी

(१) राष्ट्र भाषा—सप्ताह में ४५ मिनट के ६ घण्टे।

(२) गणित—सप्ताह में ४५ मिनट के ६ घण्टे।

(३ समाज शास्त्र—(भूगोल, इतिहास और नागरिकता) सप्ताह मे ४५ मिनट के ६ घण्टे।

(४) प्रकृति अवलोकन—सप्ताह में ४५ मिनट के ३ घण्टे।

(५) गायन शास्त्र व शारीरिक शिक्षा—सप्ताह मे ३० मिनट के ६ घण्टे।

(६) गृहकार्य—(खाना पकाना, सीना पिरोना) सप्ताह में ४५ मिनट के ४ घण्टे।

(७) कृषि—सप्ताह में ६० मिनट के ६ घंटे।

(८) उद्योग और कला—सप्ताह मे ६० मिनट के ६ घंटे।

इस अवधी से प्रयत्न यह होता है कि विद्यार्थियों की इन विषयों में अच्छी योग्यता हो जाय जो प्राइमरी पाठशालाओं में पढ़ाई जाती है। इसलिये इन विषयों के शिक्षण में विशेषतः राष्ट्र-भाषा व गणित पर काफी ध्यान दिया जाता है।

दूसरी अवधी

(१) राष्ट्र भाषा—सप्ताह में ४५ मिनट के ५ घंटे।

(२) गणित—सप्ताह में ४५ मिनट के ५ घण्टे।

(३) प्रकृति अवलोकन—सप्ताह में ४५ मिनट के ५ घंटे।

(४) समाज शास्त्र—(भूगोल इतिहास व नागरिकता) सप्ताह में ४५ मिनट के ५ घंटे।

(५) गायन शास्त्र व शारीरिक शिक्षा—सप्ताह में ३० मिनट के ६ घंटे।

(६) शरीर विच्छेद ज्ञान तथा स्वास्थ्य रक्षा—सप्ताह में ४५ मिनट के ५ घन्टे।

(७) लिखना और ड्राइंग—सप्ताह में ३० मिनट के ४ घन्टे।

(८) गृहकार्य—जिसमें खाना पकाना सीना पिरोना शामिल हैं, सप्ताह में ४५ मिनट के ४ घंटे।

(९) कृपिकार्य–सप्ताह मे ७५ मिनट के ६ घण्टे।

(१०) उद्योग और कला—सप्ताह मे ७५ मिनट के ६ घण्टे।

तीसरी अवधी

(१) राष्ट्र भाषा—सप्ताह में ४५ मिनट के ३ घंटे।

(२) गणित—सप्ताह में ४५ मिनट के ३ घंटे।

(३) समाज-शास्त्र—सप्ताह मे ४५ मिनट के ३ घंटे।

(४) गायनशास्त्र और शारीरिक शिक्षा—सप्ताह में ४५ मिनट के ६ घंटे।

(५) ग्रामीण जीवन का अध्ययन—सप्ताह मे ३० मिनट के ३ घंटे।

(६) बच्चों का अध्ययन और शिक्षा के सिद्धान्त—सप्ताह में ४५ मिनट के ३ घंटे।

(७) गृह कार्य (छात्राओं के लिये)—सप्ताह मे ४५ मिनट के ३ घंटे।

(८) कृपि कार्य—सप्ताह में ६० मिनट के ६ घंटे।

(९) उद्योग और कला—सप्ताह मे ६० मिनट के ६ घंटे।

(१०) पढ़ना लिखना सिखाने के ढंग—सप्ताह मे ४५ मिनट के २ घंटे।

(११) गांव की पाठशालाओं का अध्ययन (बारी बारी से)

चौथी अवधी

(१) राष्ट्र भाषा—सप्ताह में ४५ मिनट के ३ घंटे।

(२) गणित—सप्ताह में ४५ मिनट के ३ घंटे।

(३) ग्राम सुधार—सप्ताह में ४५ मिनट के ३ घंटे।

(४) ग्रामीण पाठशालाओं का प्रबन्ध—सप्ताह में ४५ मिनट के ३ घंटे।

(५) पढ़ाने के नियम—सप्ताह में ४५ मिनट के ३ घण्टे।

(६) गृह कार्य (छात्राओं के लिये)—सप्ताह में ४५ मिनट के २ घण्टे।

(७) गायन और शारीरिक शिक्षा—सप्ताह में ३० मिनट के ६ घण्टे।

(८) कृषि—सप्ताह में ६० मिनट के ६ घण्टे।

(९) गांव की पाठशाला में अभ्यास के पाठों का काम (बारी बारी से)

आदेश :—

पाठशालाओं के निरीक्षक अपनी अपनी पाठशालाओं के हालात के आवश्यकतानुसार इन घण्टों में परिवर्तन कर सकते हैं, यदि इससे शिक्षण के कुल समय में कोई कमी न हो।

इन अध्यापकों के पाठशाला के उद्देश्य में एक बड़ा उद्देश्य अपने क्षेत्र की छोटी छोटी टोलियों को देश की उन्नति के साथ लगाना

है। इसीलिये इन पाठशालाओं को अपनी वस्ती के तमाम कामो की देख भाल और उसकी केन्द्रीय पाठशाला की सहायता व निरीक्षण भी करना होता है। ये पाठशालाएं अपनी ओर से भी कुछ काम शुरू करती हैं।

केन्द्रीय सरकार की ओर से उन्हें यह भी आदेश होता है कि शनिवार या इतवार के दिन वे शाम को या रात मे वस्ती के प्रौढ़ों के लिये साधारण विज्ञान, कृपि, उद्योग व गृहकार्य की शिक्षा का भी प्रवन्ध करें। और इस शिक्षा में अध्यापकों की पाठशाला के विद्यार्थी और स्वयं अध्यापक भी भाग लें।

इन अध्यापकों के तमाम शिक्षा सम्बन्धी कार्यों और अध्यापकों की शिक्षा के सम्बन्ध मे कोई केन्द्रीय पाठशाला न हो उस समय तक उस क्षेत्र में अध्यापकों की पाठशाला नहीं खोली जाती। साधारणतया इसमे अध्यापकों की पाठशाला के विद्यार्थी अपने अध्यापकों के निरीक्षण मे शिक्षा देते हैं।

वस्ती और पाठशाला के इस जीवन मे आने वाला अध्यापक इन तमाम वातों का न केवल अवलोकन ही करता है बल्कि क्रियात्मक अनुभव प्राप्त करता है जो उसे अपने भावी जीवन में स्वयं करनी है।

पाठशाला के आसपास जो दूसरी वस्ती और नगर हैं, उनमें वे घरेलू जीवन का सुधार-पैतृक व्यवसायों और उद्योगों को अच्छा बनाना, स्वास्थ्य का विचार, मनोविनोद और जीवन को सुगन्ध बनाना आदि के तमाम ढंग सीखते हैं। इन पाठशालाओं के कामों

से आसपास की तमाम वस्तियों और क्षेत्रों में आशा और प्रसन्नताकी एक लहर दीखती है। और वे लोग स्वयं भी अपने सुधार के काम में लग जाते हैं। इस प्रकार की शिक्षा से केन्द्रीय सरकार की अनुमति में ऐसे शिक्षक निकलेंगे जो वास्तविक पथप्रदर्शक और सेवक होंगे। जो अपनी नैतिक व क्रियात्मक शिक्षा से वस्ती के लोगों को देश की उन्नति और हित के कार्यों में सम्मिलित कर सकेंगे और ये ही मेक्सिको की इन सामाजिक पाठशालाओं का सबसे बड़ा ध्येय है।

अध्यापकों के लिये पाठशालाएँ उन अध्यापकों की शिक्षा का काम भी करती हैं जो नौकर-चाकर हैं। और वह उनके लिये समय समय पर छोटे छोटे "रेफ्रेशर कोर्स" (Refresher Course) भी लेते रहते हैं, खासतौर पर छुट्टियों के समय में। इन पाठ्यक्रमों की अवधी १० दिन से लेकर २ सप्ताह तक होती है। इस समय में केवल ऐसी चीजें सिखाई जाती हैं जो उनकी सामाजिक दशा और उद्योग के ज्ञान को ठीक करें और यह पाठ्यक्रम संक्षिप्त होते हुये भी इनके लिये वहुत उपयोगी और जीवनदायी सिद्ध होते हैं।

मकान और सामान

मकान और सामान के सम्बन्ध में अध्यापकों की ये पाठशालाएँ मेक्सिको की दूसरी पाठशालाओं की भांति वहुत सादा होती हैं। वे किसी प्रकार भी अपनी वस्ती या सरकार पर भार नहीं होती। इन में कुछ पुरानी हवेलियों और मंदिरों में स्थित हैं। इन

पाठशालाओं से मिली हुई बहुधा कृषि के लिये भूमि होती है जो या तो बस्ती के लोगों की दी हुई होती है या सरकार की ओर से मिलती है। पाठशालाओं के काम के लिये जब कोई पुरानी टूटी फूटी हवेली दी जाती है तो सबसे पहिले विद्यार्थी और अध्यापक मिल कर बस्ती वालों की सहायता से उसे ठीक करते हैं। और रहने सहने और काम करने के योग्य बना लेते हैं। इसमें कभी कभी राज और मजदूरों की आवश्यकता पड़ती है जो वे स्वयं निःसंकोच करते हैं। पाठशालाओं का सामान भी बहुत साधारण होता है, और कभी कभी तो वह पाठशाला ही के प्रयत्नों से प्राप्त होता है परन्तु केन्द्रीय सरकार ने स्थान और मकान से सम्बन्धित कुछ नियम भी बना दिये हैं, जिनका वर्णन बड़ा मनोरंजक है। वे लिखते हैं—"इस उद्देश्य से कि वे अपना ध्येय पूरा कर सकें अध्यापकों की पाठशाला के मकान ऐसी जगह बनाये जायें जहां से कोई न कोई बड़ी बस्ती निकट हो। इसके अतिरिक्त इनके स्थापित करने मे निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। चूंकि अध्यापकों की पाठशालाएं छात्रों के ठहरने का स्थान होंगी, इसलिये इनमें निम्नलिखित बातों के लिये स्थान होना चाहिये :—

(१) पढ़ाई के कमरे, छात्रावास, स्नानगृह, खाने के कमरे, रसोई-घर, पेशाब-घर व पाखाने आदि।

(२) पाठशालाओं से मिली हुई अच्छे ढंग की कृषि के योग्य इतनी भूमि होनी चाहिये जो बागबानी, साग, फल और

खेती के लिये पर्याप्त हो सके। ऐसी भूमि का क्षेत्रफल ६ एकड़ से कम न होना चाहिये और यदि उस क्षेत्र में वर्षा संतोषजनक न होती हो तो सिंचाई का भी उचित प्रबन्ध होना चाहिये।

(३) पाठशाला से सम्बन्धित मकानात इतने हों कि इन कामों के लिये स्थान निकल सके। कला और दस्तकारी के लिये कार्य-गृह, घरेलू जानवरों के लिये बाड़े और रहने सहने के लिये मकानात।

(४) अध्यापकों की पाठशाला से मिली हुई छात्रों के अभ्यास के पाठों के लिये एक प्रारम्भिक पाठशाला का होना भी आवश्यक है।"

इसके बाद दो एक अध्यापकों की पाठशाला के हालात भी लिखे जाते हैं, जिनसे उनके जीवन और कार्य का सच्चा ज्ञान मिल सके। मेक्सिको नगर में अध्यापकों की शिक्षा की एक बड़ी पाठशाला है। यह पाठशाला लगभग ५० वर्ष पहिले स्थापित हुई थी। आरंभ में नार्मल स्कूल के नाम से थी, बाद में यह अध्यापकों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठशाला के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस पाठशाला से मिला हुआ अति सुन्दर भवन, खेल के मैदान, जिमनेज़ियम (अखाड़ा) और तालाब हैं। इस पाठशाला का पाठ्यक्रम कुल ३ वर्ष का है जो पाठशाला और द्वितीय शिक्षा की पाठशालाओं के अध्यापकों की शिक्षा के लिये दिया जाता है। छात्रों की कुल संख्या ७०० के लगभग है। कभी २

तीन-तीन सौ प्रार्थियों के प्रार्थना-पत्र लौटाने पड़ते हैं। प्रवेश के लिये कम से कम मैट्रिक होना आवश्यक है। इसके बाद इनकी कई मनोवैज्ञानिक व शारीरिक परीक्षाएं होती हैं। तमाम पाठ्यक्रम शिक्षा से सम्बन्धित है। प्रथम वर्ष मे विद्यार्थी नगर और आस-पास की पाठशालाओं का अध्ययन करते हैं, द्वितीय वर्ष कुछ कुछ पढ़ाने के काम मे भाग लेना शुरू करते हैं। तीसरे वर्ष नियमित ढंग से अभ्यास के पाठ देते हैं। नगर और आसपास की पाठशालाओं के अतिरिक्त वह एक बालकों की बाड़ी मे काम करते हैं जो एक घने वृक्षों के झुण्ड मे स्थित है। इसमें बालक फल, पत्तो, पक्षियों व पशुओं के साथ मिलकर खेलते कूदते हैं। और वे सब कुछ प्राप्त करते हैं जो इनके लिये आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त एक और पाठशाला का हाल सुनिये। जोमावे (Jaumave) रियासत तमोलीपस (Tamaulipcs) मे एक स्थान है, जो १९१० की क्रांति के बाद युद्ध का केन्द्र रहा है। इस क्रांति ने वे सब कुछ नष्ट कर दिए जो जो मनुष्य के हाथों ने बना रखा था। यहां की हर वस्तु इस क्षति का वृत्तांत अपने मुख से कह रही है। यदि कोई चीज बच गई थी तो वह किसी एक बड़े धनी जमीदार का मकान था जो एक समय से वीरान पड़ा था। इसके आसपास जो जमीन थी उसका कुछ भाग तो आस-पास के रहने वालों ने अपने अधिकार मे कर लिया था। शेष की ओर किसी का ध्यान भी नहीं जाता था कि इसे ठीक करके उपयोगी बनावें। कुछ समय हुआ केन्द्रीय सरकार ने यहां अध्या-

पकों की टुकड़ी भेजी जो प्रचारकों का सा साहस और उत्साह रखती थी। इन अध्यापकों ने इस मकान और इसके आसपास की भूमि को साफ करके वहां एक अध्यापकों की पाठशाला की नींव डाली। उन्होंने यहां आकर उन देश सेवकों की भांति कार्य करना आरम्भ किया जो बिना किसी सांसारिक स्वार्थ के केवल एक उद्देश्य की पूर्ति के लिये काम करते हैं। उनके हाथ यद्यपि हर प्रकार के साधनों से खाली थे परन्तु उनके हृदय साहस और उत्साह से परिपूर्ण थे। उन्होंने सर्वप्रथम इस मकान को ठीक करना आरम्भ किया और उसके आसपास की भूमि को कृषि के योग्य बनाने में जुट गये। उन्होंने भांति २ के उद्योगों के लिये प्रयत्न किये। जानवरों के रखने का प्रबन्ध किया और इनके अलावा सब से महान कार्य जो किया वह यह कि बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध किया। जन साधारण ने उस समय तक इनके कामों में सहयोग नहीं दिया जब तक कि वे उनके कामों को लाभ-प्रद न समझ गये और सच तो यह है कि इन अध्यापकों और विद्यार्थियों के साहस व उत्साह से कोई भी मनुष्य प्रभावित हुये बिना न रह सका।

डेढ़ साल के घोर और निरन्तर प्रयत्न के बाद इस समय इस पाठशाला के पास २६ बीघा जमीन कृषि योग्य हो गई, जिसमें मक्का, गन्ना और साग की अच्छी फसलें होती हैं। इस भूमि में अखरोट और नाशपाती के फलदार पेड़ भी हैं। पाठशाला के छात्रों ने एक सहयोग-समिति (Co-operative Society)

स्थापित कर ली है जिसके अन्तर्गत बहुत से लाभदायक कार्य हो रहे हैं, जैसे कपड़े बुनने का काम, मुर्गियां पालना, गाय बकरियां और सूअर रखना, कृषि सम्बन्धी कार्य, रोटी और नाई के काम की दूकानें हैं। इन तमाम विभागों की सम्पत्ति का अनुमान इससे हो सकता है कि इस समय पाठशाला के पास ४८ मुर्गियां, ४ रोड़ आइलैण्ड जाति के मुर्गे, २६ अलम्बरी बत्तखें, १७ मुर्गियां, ५ घोड़े, १७ गायें जिनमें ४ बड़ी जाति की गायें और १ जरसी जाति का सांड़ है, और एक होल्सटाइन जाति की गाय है और १ ऐरिशायर जाति का सांड़ है। बकरियों में १४४ बड़ी जाति की, ४६ दूसरी जाति की और ५० बच्चे हैं जो मिश्रित नोवेन जाति के हैं इसके अतिरिक्त ४ नोविन जाति के बकरे भी हैं। ३२ सूअर जिनमे कुछ पोलेण्ड चीन जाति के हैं—ये सब पशु पाठशाला की सहयोग-समिति की सम्पत्ति हैं। इस पाठशाला में रोटी, दूध और मांस का जो खर्च होता है, वह सब इस समिति द्वारा पूरा होता है। इस समय तक जो कुछ भी पैदावार होती है वह सब पाठशाला में व्यय हो जाती है। परन्तु बहुत कुछ उन्नति होने की आशा है। और हमें इन चीजों के लिये मण्डी तलाश करनी पड़ेगी। इन बच्चों और अध्यापकों के परिश्रम को देख कर हम आशा करते हैं कि हम बहुत शीघ्र सरकार की सहायता से निवृत्त हो जायेंगे और स्वयं अपने पैरों पर खड़े हो जायेंगे। जब वह दिन आ जायेगा तब हम राज्य के शिक्षा-विभाग से आर्थिक सहायता की नहीं बल्कि साहस और उत्साह बढ़ाने की प्रार्थना करेंगे। इस पाठ-

शाला में ५६ छात्र हैं जिनमें ५० का खर्चा शिक्षा विभाग देता है और शेष में से ३ का खर्चा पाठशाला देती है और शेष ६ अपना खर्चा स्वयं वर्दाश्त करते हैं। इस साल १६ विद्यार्थियों की शिक्षा समाप्त हुई जिनके सम्बन्ध में डाइरेक्टर का कहना था कि "इनमें से हरेक ऐसी लकड़ी के बने हैं जो पथ-प्रदर्शक के लिये सबसे उपयुक्त हैं। और इनमें से हरेक न केवल बच्चों को पढ़ाने के लिए ही बल्कि मानव-सेवा के लिये सब से अधिक योग्यता रखता है।" इन पाठशालाओं में विद्यार्थी प्राइमरी पाठशालाओं की छठी श्रेणी पास करके आते हैं और दो या तीन वर्ष तक, जैसी सूरत हो, उसमें रहते हैं। इस बीच में भांति २ की कलाएं, उद्योग, कृषि, पशु-पालन आदि का काम सीखते हैं। छात्राएँ गृह-कार्य का काम सीखती हैं। यही नहीं बल्कि पड़ोस के क्षेत्रों में जाकर ये छात्रगण इन सभी कार्यों का अभ्यास भी करते हैं—जैसे गृह-जीवन के सुधार का काम, स्वास्थ्य की समस्याएं और मनोविनोद का अभ्यास आदि। अध्यापकों की पाठशालाओं के इन कार्यों से बस्ती और क्षेत्र के लोगों में एक उत्साह पैदा हो गया है और इन्हें अपनी आगामी उन्नति की बहुत आशा बंध गई है। वह स्वयं अपनी उन्नति के कामों में आप लग जाते हैं इससे यह सिद्ध होता है कि हर अध्यापक अपनी शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् एक अच्छा मानव-सेवक हो जाता है।

इस पाठशाला के अध्यापक और विद्यार्थियों ने इस बञ्जर क्षेत्र को जिस तरह इस पाठशाला में परिवर्तित कर दिया है, उसके

आसपास की बञ्जर भूमि को उसी तरह हरी भरी खेती मे बदल दिया है। बच्चों के सीखने के लिये खेती की प्रयोगशाला खड़ी कर दी है। ये वे बातें हैं जो मेक्सिको में साधारणतया पाई जाती हैं। इस कार्य-प्रणाली का यह परिणाम है कि आर्थिक साधनों की कठिनाई होते हुऐ भी इस थोड़े समय में इतनी पाठशालाए और शिक्षालय खुल गये हैं।

मेक्सिको मे स्पेन के राज्य काल मे बहुत से मठ और गिरजे बने थे जिनमें से कुछ भवन-निर्माण-शास्त्र और कला की उत्तम कृतियां थीं। ये स्थान उस समय की सम्पत्ति और सभ्यता के केन्द्र थे। यद्यपि कालचक्र और क्रांतिचक्र के कारण इनकी दशा बहुत खराब हो गई थी और बहुतों की केवल दीवारें ही शेष रह गई थीं तथापि इनमें से जो काम के लिये उचित समझे गये उन्हें पाठशालाओ में परिवर्तित कर दिया गया। इससे न केवल यह हुआ कि पाठशाला के लिये भवन का खर्चा बच गया बल्कि कला और भवन-निर्माण के उच्च कोटि के नमूने नाश से बच गये. जिनकी रक्षा का और कोई उपाय ही न था। इनका सब से अच्छा उदाहरण ओक्सेटपिक (Oxctepec) का मठ है, जो १५४३ ई० में बना था। इसकी छत और दीवारों पर प्राचीन स्पेनी ढंग की चित्रकारी की गई थी। इतना समय बीत जाने के कारण वह सब मिट गई थी, लेकिन अब फिर से उन्हें प्रकाश मे लाया गया है। जहां जहां चित्रकारी बिल्कुल मिट गई थी वहां फिर बनाने का प्रयत्न किया गया।

इन प्राचीन ऐतिहासिक भवनों की मरम्मत जो किसी समय मठ गिरजे व जागीरदारों के मकान थे और इनमें नवीन आवश्यक वस्तुओं का प्रयोग करना जैसे स्नान के लिये तालाव, खेल के लिये मैदान आदि—ये सव विना पैसों से या थोड़े पैसों से केवल अध्यापकों के परिश्रम से वने हैं जो मेक्सिको की शिक्षा सम्वन्धी योजना का अनिवार्य भाग है। वच्चों और अध्यापकों की ये पाठ-शालाएं साहस, स्फूर्ति और दृढ़ निश्चय के साक्षात् नमूने हैं जिनमें धन और प्रभाव का वहुत कम स्थान रहा है। यद्यपि इनके भवन सादे और सामग्री साधारण होती है तथापि इनके पीछे आत्मीयता विद्यमान है जो अपने प्रकाश के लिये समस्त सांसा-रिक साधनों से निश्चिन्त हैं।

अध्यापकों की इन पाठशालाओं की संख्या इतनी थोड़ी है कि वे ग्रामीण पाठशालाओं की पूर्ति नहीं कर सकते हैं, जो १००० प्रति वर्ष की गति से वढ़ रही है। वर्तमान परिस्थितियों में प्रयत्न है कि हर एक प्रांत और क्षेत्र में एक अच्छे अध्यापकों की पाठ-शाला हो जावे और जो पाठशालाएं इस समय स्थित हैं वे अपने अस्तित्व को अधिक उपयोगी वना सकें।

पांचवां परिच्छेद

शिक्षा विभाग

पिछले पृष्ठों में यह वर्णन आया है कि तमाम ग्रामीण पाठशालाएं केन्द्रीय सरकार की ओर से स्थापित की जाती हैं और राज्य की ओर से ही उनकी देख भाल होती है। केन्द्रीय सरकार के ये सब कार्य शिक्षा विभाग के द्वारा होता है जिसका पदाधिकारी उस मंत्री-मंडल का उसी प्रकार का सदस्य होता है जिस प्रकार और विभागों के पदाधिकारी होते हैं। इस सबसे उच्च पदाधिकारी की नियुक्ति जनतत्र के प्रधान स्वयं करते हैं।

सन् १९२१ तक मेक्सिको में शिक्षा का हर रियासत का अपना कर्त्तव्य था। २८ राष्ट्रों मे से अपना अपना प्रत्येक का शिक्षा संगठन था। कुछ ऐसे क्षेत्र थे जो सीधे केन्द्रीय सरकार के अन्तर्गत थे। उनकी शिक्षा का प्रबन्ध केन्द्रीय सरकार करती थी। ओबरेगोन (Ooberegon) की प्रधानता के समय मे केन्द्रीय सरकार में परिवर्तन हुआ और उस समय से शिक्षा का तमाम प्रबन्ध और उसका निरीक्षण केन्द्रीय सरकार के हाथ आ गया। साधारणतः देखा जाय तो केन्द्रीय सरकार ने ऐसे स्थानों मे अपनी पाठशाला स्थापित की है जहाँ रियासती राज्य कुछ करने में असमर्थ रही है और इस समय एक प्रकार से कुल तीन संस्थाएं

हैं जो देश में शिक्षा का कार्य कर रही हैं। (१) केन्द्रीय सरकार (२) रियासती राज्य (३) म्युनिसिपल संस्थाएँ, और इन तीनों के काम में परस्पर कोई वैमनस्य और मत-भेद नहीं है। परन्तु गत कई वर्षों से केन्द्रीय सरकार की पाठशालाओं की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है और इस समय रियासतों के द्वारा स्थापित पाठशालाओं से इनकी संख्या कई हजार अधिक है और अपनी शिक्षा प्रणाली, पाठ्यक्रम और संगठन में भी रियासतों की पाठशालाओं से आगे है।

केन्द्रीय शिक्षा विभाग में कुल २६ शाखाएँ हैं जिन में से प्रत्येक शाखा सरकार द्वारा स्थापित पाठशालाओं के किसी न किसी कामसे सम्बन्ध रखती है। इसी प्रकार से मंत्री के आधीन जो शिक्षा विभाग का सबसे बड़ा पदाधिकारी होता है, बड़ी २ शाखाएँ और छोटी २ शाखाएँ हैं। इन बड़ी शाखाओं में एक प्राइमरी शिक्षा और अध्यापकों की शिक्षा की शाखा है। एक ग्रामीण पाठशालाओं की शाखा है, एक कला कौशल के शिक्षण की और इसी प्रकार दूसरी शाखाएँ हैं। छोटी शाखाओं में एक 'नागरिकता-प्रचारक' शाखा है। एक द्वितीय शिक्षा की, एक रेडियो द्वारा शिक्षा की और इसी प्रकार की कुछ और भिन्न २ शाखाओं के नाम उनके कार्यों के आधार पर होते हैं और इनमें से कुछ शाखाओं के काम उनकी सामाजिक और राष्ट्रीय आवश्यकतानुसार विशेष महत्व रखते हैं जैसे छोटी २ शाखाओं में एक संस्कृति के प्रचारकों की शाखा जो राष्ट्रीय एकता उत्पन्न करने में बड़ा महत्त्व रखती है।

इसी प्रकार एक प्राचीन इमारतों और शिल्पकारी की शाखा है जो बच्चों मे राष्ट्रीय गौरव उत्पन्न करने में बहुत सहायता देती है। इसी प्रकार एक आंकड़ों और उनकी गणना की शाखा है जो विद्यार्थियों की उपस्थिति और राष्ट्रीयता के सम्बन्ध मे उनका लेखा रखती है।

इसी के साथ व्यय का संक्षिप्त वर्णन भी मनोरंजक होगा। चूंकि हमे यहाँ केवल प्राइमरी शिक्षा अध्यापकों की शिक्षा, ग्रामीण शिक्षा, द्वितीय शिक्षा, कला और उद्योग शिक्षा से सम्बन्धित है। इसलिये हम इन्हीं विभागों के व्यय के आंकड़े देंगे। सन् १६२८ की सूचनानुसार इस विभाग के कुल व्यय का ७१ प्रतिशत इन शाखाओं पर निम्न प्रकार से खर्च किया था :—

(१) प्राइमरी और अध्यापक शिक्षा पर ३६ प्रतिशत
(२) ग्रामीण पाठशालाओं पर १७ प्रतिशत
(३) उद्योग की शाखा पर ११ प्रतिशत
(४) द्वितीय शिक्षा पर ४ प्रतिशत

शिक्षा विभाग का कार्यालय, और कार्यालय से सम्बन्धित कार्य खास नगर के भीतर एक बड़े भवन मे है जो मुख्यतः इसी उद्देश्य के लिये निर्माण किया गया है।

केन्द्रीय सरकार की कुछ खास और बड़ी इमारतों में यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण और आकर्षक है। इसी कारण यह जन-साधारण के ध्यान का केन्द्र बन गई है। यह एक बड़े अहाते के अंदर बनी हुई है और इसके बरामदों की दीवारों पर प्रहाने

के चारों ओर मेक्सिको के प्रसिद्ध कलाकार डिगोराविरा (Diego-rivera) के बनाये हुये चित्र हैं। ये चित्र सन् १९१० की क्रांति से सम्बन्ध रखते हैं। भवन के बीच का आंगन उत्सव और अभिनय के नाटक के लिये काम में आता है जिससे मालूम होता है कि इस भवन की ओर लोगों की क्या भावना है। जब बच्चों का कोई नाटक करना होता है या ग्रामीण नाच दिखाना होता है, तो इस आंगन का प्रयोग होता है। यह आंगन मेक्सिको की सब पाठशालाओं के लिये खुला है और इसी कारण इसे एक केन्द्रीय स्थान प्राप्त हो गया है। इस भवन में सभी पाठशालाओं, उद्योग और कला के कार्यों की एक स्थायी प्रदर्शनी रहती है जो हर समय लोगों के ध्यान का केन्द्र बनी रहती है।

संगठन और निरीक्षण

केन्द्रीय सरकार के आधीन ये पाठशालाएँ हैं, जो खास तौर से एक विशेष शाखा के आधीन हैं जो ग्रामीण पाठशालाओं और नागरिकता के प्रचारकों की शाखा कहलाती है।

ये पाठशालाएँ सीधी एक डाइरेक्टर के आधीन होती हैं जिस की नियुक्ति मंत्री, शिक्षा विभाग करता है। इस विभाग का कार्यालय इसी केन्द्रीय भवन में होता है जिसमें बहुत से सहायक अधिकारी भी काम करते हैं जिन का सम्बन्ध सीधा डाइरेक्टर से होता है। डाइरेक्टर का और विभागों से सम्बन्ध रहता है जिनका इन पाठशालाओं के काम से सीधा सम्पर्क होता है।

ये विभाग जिनका परस्पर एक दूसरे से सम्बन्ध होता है अध्यापकों की शिक्षा के और प्राइमरी शिक्षा के विभाग हैं और फिर इनके अतिरिक्त स्वास्थ्य रक्षा और कृषि विभाग भी इन्हीं में सन्मलित हैं। इन ग्रामीण पाठशालाओं की स्थापना रियासत और दूसरे क्षेत्रों में केन्द्रीय सरकार के नियुक्त किये अधिकारियों द्वारा होती है। हर रियासत में केन्द्रीय सरकार की ओर से एक अधिकारी होता है जो इन पाठशालाओं का निरीक्षण भी करता है। रियासत में कई क्षेत्र होते हैं जिनमें से प्रत्येक मे केन्द्रीय सरकार की ओर से एक अधिकारी रहता है जो उस क्षेत्र की सब पाठशालाओं का निरीक्षण करता है। रियासत के डाइरेक्टरों का यह कर्तव्य होता है कि वे क्षेत्रों के निरीक्षकों के कार्यों में समानता व एकता पैदा करें। इन केन्द्रीय अधिकारियों का भी यह काम होता है कि वे रियासत के निरीक्षकों और नागरिकता के प्रचारकों द्वारा इन पाठशालाओं के कार्यों को और भी अच्छा बनावें। इस प्रकार इनमें परस्पर एक सम्बन्ध और एकता स्थापित हो जाती है।

क्षेत्रों का निरीक्षक अपने क्षेत्र की केन्द्रीय-सरकार का प्रतिनिधि होता है और उस क्षेत्र की सभी पाठशालाओं के कार्यों का उत्तरदायी होता है। इस नाते उसके अधिकार बहुत विस्तृत होते हैं और उससे वह अपने आधीन निरीक्षकों का पूरा विश्वासपात्र होता है। अपने क्षेत्र के अन्दर पाठशालाओं के मामलों में उसे पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। वह अध्यापकों का चुनाव व नियुक्ति करता है और विशेष कारण होने पर उन्हें हटा भी सकता है।

वह अध्यापकों की सहायता से पाठशाला और बस्ती में विशेष कार्यक्रम चलाने का भी आयोजन करता है। इसकी सफलता का आधार सबसे अधिक इस बात पर निर्भर होता है कि पाठशाला की वह शिक्षा-समिति के साथ मिलकर काम कर सके।

पाठशाला और बस्ती के बीच सम्पर्क और एकता पैदा करना केन्द्रीय सरकार की शिक्षा-योजना का सबसे अधिक महत्व-पूर्ण उद्देश्य है और इस कारण यह क्षेत्र के निरीक्षक का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व है। वह रियासत के निरीक्षक को जो केन्द्रीय सरकार की ओर से नियुक्त होता है, समय २ पर इसकी सूचना देता रहता है और ऐसी सब सूचनाओं को जो भिन्न २ क्षेत्र से आती हैं, केन्द्रीय-कार्यालय में भेज देता है।

इन निरीक्षकों पर प्रबन्ध सम्बन्धी उत्तरदायित्व बहुत कम होता है। इसका बड़ा कारण यह मालूम होता है कि इन पाठ-शालाओं के भवन और सामान बहुत सीधे-सादे होते हैं और पाठ-शालाओं से सम्बन्धित बस्ती और केन्द्रीय सरकार के बीच कर्त्तव्य का विभाजन बहुत साफ और सादा होता है। बस्ती के लोग भवन व सामान देते हैं और केन्द्रीय सरकार पुस्तक और अध्यापकों का वेतन देती है। दूसरा कारण यह भी है कि अध्यापकों को अपने अनुभवों के आधार पर अपनी योजना बनाने की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है और इन निरीक्षकों का यह कर्त्तव्य नहीं होता कि इन्हें बनी बनाई योजना देते रहें। पाठशाला और बस्ती के अन्दर बहुधा कार्यक्रम चलाने का काम अध्यापकों के आधीन होता है।

इसलिए वे भी इस प्रकार के उत्तरदायित्व से मुक्त होते हैं। निरीक्षक का सबसे बड़ा काम यह होता है कि इन पाठशालाओं की शिक्षा की उन्नति का ध्यान रखें और अध्यापकों को इस कार्य में पथ-प्रदर्शन करें।

क्षेत्रों का विभाजन क्षेत्रफल और पाठशालाओं की संख्या के अनुसार ऐसा समानुपात होता है कि शिक्षा के निरीक्षण का कार्य भलीभांति हो सके। इससे न केवल निरीक्षक को निरीक्षण मे सुविधा होती है बल्कि यह भी संभव होता है कि वह अध्यापकों के साथ सम्पर्क बना सकता है और विचार-विनिमय और परामर्श के लिए उनकी छोटी २ सभाएं भी बुला सकता है।

क्षेत्र का निरीक्षक उन वार्षिक पाठ्यक्रमों में अध्यापकों की हाजरी और उनके शिक्षण से लाभ उठा सकता है, जो नागरिकता के प्रचारकों की टोलियां आकर दिया करती हैं। उन सिफारिशों और नई बातों पर कार्य किये जाने का भी उत्तरदायी होता है जो आगामी वर्ष के लिये बताई जाती है।

निरीक्षण का एक अच्छा साधन अवलोकन की वे पाठ-शालाएं है जो हर रियासत में स्थित हैं। ये पाठशालाएं यद्यपि अनुभव-प्राप्ति के हेतु स्थापित की जाती है किन्तु उनका बड़ा उद्देश्य केन्द्रीय और रियासती लोगों के लिये आदर्श के रूप मे काम करना है। जहां भांति २ के प्रयोग चलते है। ये पाठशालाएं केन्द्रीय सरकार की ओर से रियासत के डाइरेक्टरों के संरक्षण में काम करती हैं।

एक क्षेत्र में निरीक्षक का जो कार्य होता है उससे अनुमान होता है कि शेष क्षेत्रों में क्या होता होगा। यद्यपि स्थानीय भेद-भाव का भी बड़ी सीमा तक ध्यान रक्खा जाता है। तथापि इनका सबसे बड़ा कार्य शिक्षा-सुधार है। वह जिन बातों की ओर ध्यान आकर्षित करता है वह शिक्षा के अच्छे ढंग, पाठशालाओं का उचित प्रबन्ध और बच्चों की उन्नति की रिपोर्ट से सम्बन्धित है। वह सप्ताह के तीन दिन अलग २ भागों में अध्यापकों के विचार-विमर्श सभाओं में लगाता है। शेष तीन दिन पाठशालाओं के देखने में कार्यालय से सम्बन्धित नित्य का कार्यक्रम उसके पास बहुत कम होता है और जो होता भी है वह भी शाम को कर लेता है या छुट्टी के दिन। पाठशालाओं में साधारणतया ६ दिन का सप्ताह होता है और सभी पाठशालाओं के अध्यापकगण अपने को अलग २ श्रेणियों के लिये इस तरह बांट लेते हैं कि क्षेत्र-निरीक्षक सप्ताह में एक दिन प्रत्येक श्रेणी की देखभाल कर सके। ये सभाएं पूरे दिन की होती हैं। इन सभाओं में सबसे पहले एक अध्यापक कोई नमूने का पाठ पढ़ाता है जिसमें दूसरे अध्यापक भी भाग लेते हैं। पाठ के समाप्त होने पर सभी अध्यापक दोष निकालते, टीका-टिप्पणी करते और पाठ को और भी अधिक रोचक बनाने के हेतु प्रस्ताव पेश करते हैं। कभी २ पाठ किसी नवीन ढंग या सिद्धान्त को बताने के लिये लिया जाता है जिसके लिये साधारणतया या तो क्षेत्र का निरीक्षक स्वयं पाठ पढ़ाता है या किसी अनुभवी अध्यापक को इसके लिये चुन लेता है। पाठ

के अन्त पर पूरी स्वतन्त्रता से विचार-विमर्श और टीका-टिप्पणी होती है। इनके अतिरिक्त दूसरी समस्याएं जो सभा में पेश होती हैं वे बच्चों की शिक्षा की हालत और शिक्षण से सम्बन्ध रखती हैं। इन सभाओं में बस्ती के सुधार-कार्य से सम्बन्धित समस्याएं भी आती हैं। इसके अलावा एक घंटा अध्यापकों के संगठन के सम्बन्ध में भी दिया जाता है जिसमें इनके वेतन, काम करने का समय और इसी प्रकार के दूसरे प्रश्नों पर बात-चीत होती है। यह भाग क्षेत्र के निरीक्षक के आधीन न होकर स्वयं अध्यापकों की संस्था के आधीन होता है।

दूसरे भाग:—शिक्षा-विभाग से सम्बन्धित कुछ और भी छोटे विभाग हैं जैसे कला-कौशल, मनोविज्ञान, पाठशालाओं के पुस्तकालय, रेडियो द्वारा शिक्षा आदि। इनमें से हरेक विभाग ग्रामीण पाठशालाओं के कार्यालय को सभी आवश्यक सहायता देता है। शिक्षा-विभाग की कुछ बड़ी शाखाओं से जैसे प्राइमरी, अध्यापकों की शिक्षा और नागरिकता के प्रचारकों से जो सहायता ग्रामीण पाठशालाओं को मिलती है उसका वर्णन अभी ऊपर आ चुका है। सबसे पहली शाखा अर्थात् प्राइमरी शिक्षा की शाखा ग्रामीण पाठशालाओं की सहायता के अतिरिक्त उन प्राइमरी पाठशालाओं का निरीक्षण भी करती है जो केन्द्रीय सरकार के निरीक्षकों के आधीन होते हैं। गर्मी के दिनों अध्यापकों को जो 'रेफ्रेशर कोर्स' (Refresher Course) दिये जाते हैं यह उनका निरीक्षण भी करता है।

कला और कौशल की शाखा, गायन शारीरिक शिक्षा-कला और उद्योग आदि की शिक्षा का प्रबन्ध व निरीक्षण करती है। इसकी ओर से लोगों के लिये संगीत की पाठशालाएं रात को चलाई जाती हैं जिनमें दिन भर के थके-मांदे मजदूरों के लिये संगीत और दूसरे मनोविनोद के साधन सिखाने का प्रबन्ध होता है। इसी की ओर से बागीचों और दूसरे खुले स्थानों में मनोविनोद की सभाएं की जाती हैं। यह चित्रकारी सिखाने के लिये खुली हवा में पाठशालाएं खोलती हैं और ग्रामीण पाठशाला की शाखा को इनके उत्सवों के अवसर पर सजावट सम्बन्धी कामों में सहायता देती है।

आत्म संयम और मानसिक उन्नति की शाखा बच्चों की शारीरिक और मानसिक शिक्षा का कार्य करती है। इसके आधीन तमाम बच्चों की एक बौद्धिक परीक्षा होती है और उसके परिणाम के आधार पर उनका विभाजन होता है और फिर उसके अनुसार शिक्षा-प्रणाली और दूसरी बातें ग्रहण की जाती हैं।

बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य के विचार से यह शाखा औषधालय स्थापित करती है और बच्चों की डाक्टरी परीक्षा का प्रबन्ध करती है। ये पाठशालाओं के भवन, खेल कूद के स्थान और सामग्री आदि की देखभाल करते हैं। सैकड़ों हजारों बच्चों को जिनके खाने की कमी के कारण स्वास्थ्य खराब रहते हैं उनके लिये किसी न किसी प्रकार कलेवे का प्रबन्ध करती है।

पाठशालाओं के पुस्तकालयों की शाखा पाठशाला और

बस्तियों में पुस्तकालय स्थापित करती है। ये पत्र-व्यवहार द्वारा पुस्तकालयों की शिक्षा का भी प्रबन्ध करती हैं। इसके अन्तर्गत शिक्षा-विभाग में एक बहुत अच्छा पुस्तकालय भी रहता है और यह अध्यापकों के लिये हर क्षेत्र में छोटे २ पुस्तकालय भी खोलती है कि हर ग्रामीण पाठशाला में एक ऐसा पुस्तकालय हो जो अध्यापकों और बस्ती के लोगों के लिये हितकारी सिद्ध हो।

रेडियो द्वारा शिक्षा की शाखा पाठशालाओं और बस्ती के लिये शिक्षा का प्रबन्ध करती है। पाठशालाओं के लिये इनके प्रोग्राम में कहानियां, गाने, खेल और मनोविनोद की बातें होती है। ग्रामीण अध्यापकों के लिये रेडियो द्वारा प्रोग्राम दिये जाते हैं जिनका उद्देश्य इनकी नागरिक और आर्थिक अवस्था को सुधारना होता है।

शिक्षा-विभाग की ये शाखाएं मुख्य तौर पर ग्रामीण-शिक्षा की शाखा बजाय इसके कि लोगों के सामने नपा-तुला प्रोग्राम रखे, वे उनमें मानसिक उत्सुकता और गति उत्पन्न करने का प्रयत्न करती है। असल उद्देश्य यह होता है कि रियासतों की ओर से शिक्षा में कमी रह जाती है वे इस तरह से पूरी की जांय और लोगों की नागरिक-योग्यता को बढ़ाया जाय।

छठा परिच्छेद

द्वितीय पाठशालाएँ

केन्द्रीय सरकार की नई शिक्षा योजना में यह भी सम्मिलित है कि तमाम बच्चों को द्वितीय शिक्षा भी दी जाय। अतः इस समय द्वितीय शिक्षा की पाठशालाए राज्य की एक शिक्षा योजना के अङ्ग होने के नाते बड़े २ नगरों में स्थित हैं।

सन् १९१७ ई० से पूर्व द्वितीय शिक्षा कुछ उद्योगों व उद्यमों की शिक्षा की तैयारी के लिये दी जाती थी। उस समय सर्वसाधारण का यह विश्वास था कि द्वितीय शिक्षा केवल उच्च वर्ग और सम्पत्तिशाली मनुष्यों के लिये है। इसलिये मेक्सिको के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में पंच वर्षीय पाठ्यक्रम की एक भिन्न श्रेणी थी जो 'तैयारी की पाठशाला' कहलाती थी। इस पाठशाला में जो शिक्षा होती थी वह सब रूपक और बौद्धिक होती थी। पढ़ाने वाले भिन्न २ उद्योगों के लोग होते थे और कारोबार के सम्बन्ध में एक या दो घण्टे पढ़ा दिया करते थे, परन्तु यह शिक्षा आजकल की आवश्यकताओं के अनुसार बिल्कुल अपूर्ण थी।

सन् १९१७ ई० के बाद द्वितीय शिक्षा के उद्योगों में धीरे २ परिवर्तन हुआ और शिक्षा-विशेषज्ञ यह विचार करने लगे कि यदि शिक्षा द्वारा जनतंत्र स्थापित करना हो तो द्वितीय पाठशालाओं की

सुविधाएं देश के तमाम बच्चों के लिये समान होनी चाहियें। उनके ये भी विचार हैं कि द्वितीय पाठशालाओं की शिक्षा का केन्द्र और भी विस्तृत होना चाहिये और उसे बच्चों के जीवन और तमाम आवश्यकताओं के लिये तैयार करना चाहिए न कि केवल कुछ बड़े २ उद्योगों के लिये।

इस विचार परिवर्तन के होते हुए भी १९२४ तक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की यह तैयारी की पाठशाला मेक्सिको में अकेली द्वितीय शिक्षा की पाठशाला थी या फिर इसके अतिरिक्त इसी प्रकार की पाठशालाएं रियासतों और क्षेत्रों में थीं। इन पाठशालाओं में द्वितीय और उच्च दोनों श्रेणियों के पाठ्यक्रम पढ़ाये जाते थे। लेकिन इनमें परस्पर कोई भेद नहीं होता था। इन श्रेणियों से जो पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता था वह प्रारम्भिक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की उद्योग शिक्षा की तैयारी के लिये होता था।

द्वितीय शिक्षा का पुनर्सङ्गठन

सन् १९२६ ई० में बड़े २ परिवर्तन हुए। शिक्षा-विभाग की एक शाखा द्वितीय शिक्षा के नाम से शुरू हुई। और इसने तमाम देश में द्वितीय शिक्षा के सुधार और विस्तार का कार्य शुरू किया। प्रजातंत्र के प्रधान की ओर से घोषणा की गई जिसके अनुसार तमाम ऐसी पाठशालाएं जो शिक्षा विभाग के नियमों को पूरा कर सकें, केन्द्रीय शिक्षा-योजना की अंग बना ली गईं। इस घोषणा से द्वितीय शिक्षा की पाठशाला की शाखा खोली गई और

निजी पाठशालाओं के स्थापन और छात्रों के लिये इस श्रेणी की पूर्ति का आम दरवाजा खोला गया। इससे बढ़ कर ये कि राष्ट्रीय विश्व-विद्यालय की द्वितीय शिक्षा की पाठशालाएं ऊपरी और भीतरी दोनों तरह से बदल गईं। इसके प्रथम तीन वर्ष अलग कर दिये गये और उन्हें साधारण-शिक्षा का एक अंग बना दिया गया। अन्तिम दो वर्ष रह गये उनसे नये ढंग की तैयारी की पाठशाला बनाई गई जो राष्ट्रीय विश्व-विद्यालय का अंग बन कर काम करती रही। इसमें जो पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता था—उससे विश्व-विद्यालय के प्रवेश में बड़ी सहायता मिलती थी। कभी कभी आवश्यकतानुसार दो वर्ष की अवधि को बढ़ा कर ३ वर्ष भी कर दिया जाता था।

इस श्रेणी के लोग अब भी बाहर के लोग होते हैं जो केवल थोड़ी देर काम करते हैं और उसी समय का उन्हें पाठशाला की ओर से वेतन भी मिलता है जो केवल बचत के विचार से किया जाता है। द्वितीय शिक्षा की पाठशाला के अध्यापकों के वेतन ग्रामीण अध्यापकों से कहीं अधिक होते हैं। कभी २ तो यह ६ और १० गुना होता है। इन पाठशालाओं में कुछ सामग्री की भी आवश्यकता होती है इसलिये उनका व्यय अधिक होता है। बहुत से लोग इन पाठशालाओं को उनके काम के आधार पर उचित समझते हैं और कुछ इसलिये कि वैज्ञानिक उद्योगी और कारोबारी मनुष्य छात्रों को जीवन की भिन्न २ शाखाओं की समस्याओं से परिचित कराते हैं। उनका विचार यह भी है कि इन पाठशालाओं

मे बौद्धिक ज्ञान की अपेक्षा समस्याओं के क्रियात्मक पहलू पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

नवीन द्वितीय पाठशालाएं

नई द्वितीय पाठशालाएं जो अभी हाल मे खुली हैं, केन्द्रीय शिक्षा योजना का एक अंग है। इनके कारण जो शिक्षा-विभाग के अधिकारियों ने बताये हैं, कई हैं। एक तो यह है कि इस श्रेणी में बच्चे उम्र के ऐसे हिस्से तक पहुँच जाते है जिसे युवावस्था का आरम्भ कहते हैं और जिसका ध्यान रखना आवश्यक है, और दूसरे यह कि इस उम्र में बच्चों की व्यक्तिगत योग्यता का ध्यान रखना भी आवश्यक है और तीसरे यह कि द्वितीय-शिक्षा देश के सब बच्चों के लिये होनी चाहिए।

इन द्वितीय पाठशालाओं का पाठ्यक्रम ६ वर्ष की प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करने के बाद ३ वर्ष का होता है। इन पाठशालाओं के पाठ्यक्रम के चुनाव मे कुछ तो इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वे आगामी जीवन में जो उद्योग या काम करना चाहते हैं उससे कुछ परिचित हो जाये। दूसरे यह कि इनका कार्य-क्षेत्र और भी विस्तृत और जनतंत्रीय हो जाय। तीसरे यह कि वे विषयों की शिक्षा योजनाओं द्वारा दे। चौथे यह कि इनके सामाजिक ज्ञान पर अधिक जोर दिया जावे। पांचवें यह है कि इनके पाठ्यक्रम मे सामाजिक जीवन को सम्मिलित करने पर अधिक जोर दिया जावे। इस तृतीय वर्षीय पाठ्यक्रम के अन्त पर वे तैयारी की पाठशालाओं के प्रवेश के तमाम नियमों को पूरा कर लेते है।

इन पाठशालाओं की संख्या और उनमें विद्यार्थियों का प्रवेश दिन प्रति दिन बढ़ता जाता है जिससे उनकी लोक-प्रियता का पता चलता है। केवल मेक्सिको नगर में उनकी संख्या १६२६ में १ थी। १६३१ में ८ हो गई और इसी प्रकार विद्यार्थियों की संख्या ३ हजार से बढ़कर साढ़े दस हजार हो गई। स्थान के अभाव के कारण बहुत से प्रार्थियों को इन्कार करना पड़ता है। इस प्रकार की पाठशालाएं मेक्सिको के अतिरिक्त और बड़े २ नगरों में भी खुली हैं। जहां विद्यार्थियों की संख्या अधिकतर इसी प्रकार है। द्वितीय पाठशालाओं के प्रवेश का एक बड़ा नियम यह भी है कि विद्यार्थियों ने प्रारम्भिक शिक्षा के ६ वर्ष पूरे कर लिये हों और भाषा और गणित की कोई परीक्षाएं पास की हों। इस परीक्षा के बाद बौद्धिक ज्ञान और योग्यता की जांच होती है जिसका उद्देश्य केवल प्रवेश करना ही नहीं होता बल्कि यह भी निर्णय करना होता है कि वह आगे किस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने की योग्यता रखते हैं। इससे प्रवेश पर एक प्रकार का प्रतिबंध लग जाता है परन्तु ज्यों २ सुविधायें व स्थान मिलता जायेगा इन परीक्षाओं का यह उद्देश्य भी कम होता जायगा।

इन द्वितीय पाठशालाओं के अध्यापक कुछ तो पूरे समय काम करते हैं और कुछ थोड़े समय। थोड़े समय करने वालों की संख्या अधिक होती है और ऐसे अध्यापकों की संख्या परिस्थिति और आर्थिक दशा के आधार पर न्यूनाधिक होती रहती है। संगीत और कला दो ऐसे विषय हैं जिनके अध्यापक बहुधा थोड़े समय

करने वाले ही होते हैं। पाठ्यक्रम का चुनाव द्वितीय शिक्षा-विभाग के आदेशानुसार अध्यापकों और निरीक्षकों की सभायें करती हैं। ये पुस्तकें मेक्सिको के अच्छे शिक्षा-विशेषज्ञों की लिखी हुई या कभी कभी बाहर की पुस्तकों का अनुवाद होता है। इन पुस्तकों के साथ साथ सहायक अध्ययन का भी नियम होता है जिसके लिये हर बड़ी द्वितीय पाठशाला में पुस्तकालय होते हैं।

द्वितीय पाठशाला के पाठ्यक्रम मे निम्नलिखित विषय होते हैं।

१—गणित ....३ वर्ष
२—विज्ञान ....३ वर्ष
३—भूगोल ... ... ३ वर्ष
४—प्रकृति शास्त्र व वैद्यक ... . १ वर्ष
५—संसार का इतिहास.
राष्ट्रीय इतिहास व अर्थ शास्त्र ....१ वर्ष
६—स्पेनी भाषा व साहित्य............ ....३ वर्ष
७—अंग्रेजी...... .... २ वर्ष
८—ड्राइङ्ग व मोडल बनाना ....३ वर्ष
९—शारीरिक शिक्षा...... . ...३ वर्ष
१०—संगीत....... .... ३ वर्ष
११—कोई एक उद्योग (प्रथम वर्ष अनिवार्य)...
१२—नागरिक शास्त्र . ... .३ वर्ष

ग्रामीण पाठशालाओं मे काम द्वारा प्रयोगिक विषयों का जो सिद्धान्त प्रचलित है वही द्वितीय पाठशालाओं पर भी लागू है। नवीन भाषाओं में अंग्रेजी अधिक उपयोगी भाषा समझी जाती

है इसलिये इसका शिक्षा काल २ वर्ष रक्खा गया है। शिक्षा व अवेक्षण (Observation) या शिक्षा सम्बन्धी यात्राओं में बहुत गहरा सम्बन्ध है। इसलिये विद्यार्थी बहुधा कारखानों, प्रयोग-शालाओं और दूसरे स्थानों की सैर के लिये जाया करते हैं। तीसरे वर्ष हर विद्यार्थी को कम से कम तीन क्लबों का मेम्बर होना भी आवश्यक होता है और उन्हें कम से कम १० काम समाज सेवा के करने चाहिये जिनका निर्णय विद्यार्थियों की एक सभा करती है। कक्षा के बाहर के कामों का भी वही महत्व है जो आन्तरिक कामों का। कुछ द्वितीय पाठशाला मे उनके पाठ्य-क्रम का विच्छेद करके उन्हें योजनाओं (Projects) में बदल दिया जाता है। पुनर्संगठन का कार्य एक सामूहिक योजना के अनुसार होता है जिसे अध्यापक और निरीक्षक केन्द्रीय अधिका-रियों के आदेशानुसार मिल कर पूरा करते हैं। व्यक्तित्व की स्पष्टता और पूर्ति के भिन्न २ ढंग जैसे कला, संगीत और उद्योग द्वारा प्रोत्साहन दी जाती हैं। मॉडल बनाना, ड्राइंग, संगीत और कला ये सब इसी उद्देश्य से सिखाई भी जाती हैं।

नमूने की पाठशाला

नमूने के तौर पर छात्राओं की पाठशाला का विस्तृत वर्णन भी [इसलिये कि मेक्सिको में द्वितीय पाठशालाओं में सहशिक्षा (Co-education) नहीं है], मनोरंजन से खाली न होगा। इससे द्वितीय पाठशालाओं के नित्य के कार्यक्रम और दूसरे कार्यों का बहुत कुछ अनुमान भी हो सकेगा।

यह पाठशाला सन् १६२८ ई० में स्थापित हुई। उस समय उसके पास कोई भवन नहीं था। वास्तव में यह जनसाधारण के उसकी आवश्यकता के विचार और अध्यापकों व साहसी विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयत्नों का एक परिणाम थी। जब पाठशाला खुलने को हुई तो छात्राओं के प्रार्थना-पत्र आशा से अधिक आये और जिस दिन पाठशाला खुली ३०० छात्राएँ पाठशाला मे आवश्यकता से अधिक आई। ऐसे समय में भवन और सामग्री की आवश्यकता हुई। परन्तु जो हो सका वह यह कि एक निरीक्षक और कुछ अध्यापक चुन लिये गये और एक भवन जो कई दिनों से बुरी दशा मे पड़ा था पाठशाला की आवश्यकता के लिये, किसी तरह भी उपयुक्त न था, ले लिया गया। पाठशाला खुल गई, निर्माण और मरम्मत का कार्य शिक्षण के साथ साथ होता रहा। ३ वर्ष के अथक प्रयत्न के फलस्वरूप यह भवन पाठशाला का रूप धारण कर सका। आरम्भ में हर लड़की अपने साथ बैठने का और अन्य सामान लाती थी किन्तु बाद मे ये सब चीजें मुफ्त प्राप्त होने लगीं। धीरे २ पुराने कमरे ठीक करके पढ़ाई के योग्य बना लिये गये। पास पड़ौस की भूमि और मैदानों को ठीक कर लिया गया। बीच का खुला आंगन, संगीत, शारीरिक शिक्षा और कला के लिये ठीक बना लिया गया। इसके अतिरिक्त मॉडल बनाने, सीने पिरोने तथा खाना पकाने की शिक्षा के लिये भी कमरों की व्यवस्था करनी पड़ी। कुछ समय बाद इन्हीं अध्यापकों और विद्यार्थियों की सहायता से एक पुस्तकालय, तैरने के लिये तालाब और दूसरी चीजें भी बना ली गई।

सन् १९३० तक इस पाठशाला में ५०० से अधिक लड़कियां हो गईं और अब इसके स्टाफ (Staff) में एक निरीक्षक, एक सहायक निरीक्षक, १२ पूरे समय के अध्यापक और २२ कुछ समय के अध्यापक काम कर रहे हैं। कुछ समय काम करने वाले अध्यापकों का लगभग २/३ भाग सप्ताह में तीन घंटे के औसत से काम करता है शेष इससे कम करते हैं। पाठशाला में सप्ताह ६ दिन का होता है और प्रति दिन ६० मिनट के ५ घण्टे होते हैं। पाठशाला का समय ८॥ बजे से आरंभ होता है और १॥ बजे समाप्त हो जाता है। बीच मे आध घंटे का अवकाश भोजनादि के लिये दिया जाता है।

पाठशाला के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषय सम्मिलित हैं:—

१. गणित:—जिसमें अंकगणित, बीज गणित व रेखा-गणित हैं।

२. विज्ञान:—जिसमें जीवनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, भूगोल, पशुशास्त्र और स्वस्थ नियम हैं।

३. भाषा:—जिसमें अंग्रेजी और स्पेनी भाषा सम्मिलित हैं।

४. संसार और मेक्सिको का इतिहास।

५. स्पेनी साहित्य, नागरिक शास्त्र और सामाजिक योजनाओं पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है।

इस प्रकार के कार्यक्रम में एक बड़ी ही मनोरंजक योजना, एक औषधालय के लिये प्रतिवर्ष बच्चों के कपड़ों के जुटाने की थी, जो पाठशाला की लड़कियां अपने वर्गों में तैयार करती थीं। यह

हाथ का काम तीनों वर्षों में जारी रहता है और जिसमें सीना पिरोना, खाना पकाना और गृह कार्य से सम्बन्धित कार्य तथा अन्य दस्तकारियां भी सम्मिलित हैं। संगीत और खेल कूद भी पाठ्य-क्रम में अनिवार्य विषय हैं।

विषयों के चुनाव का अधिकार छात्राओं को रहता है। और वे इस तरह के हर सप्ताह में भिन्न २ कामों के लिये वर्ग बनाती हैं जो महीने भर तक चलते रहते हैं, उदाहरणार्थ एक वर्ग के कार्यक्रम की तालिका नीचे लिखी जाती है:—

समय	विषय	वार
८ से ९ तक	वनस्पति विज्ञान	सोम, बुध व शुक्र को.
"	ड्राइंग	मंगल, गुरु व शनि को
९ से १० तक	भूगोल	सोम, बुध व शनि को
"	अन्यकार्य	मंगल, गुरु व शुक्र को
१० से ११ तक	मनोविनोद	सोम, गुरु को
"	इंग्लिश भाषा	मंगल, बुध व शुक्र को
"	गणित	शनि को
११ से ११॥ तक	छुट्टी	
११॥ से १२॥ तक	गणित	सोम, मंगल व शुक्र को
"	निजी अध्ययन	बुध व गुरु को
"	मॉडल बनाना	शनि को
१२॥ से १॥ तक	संगीत	सोम को
"	अंग्रेजी	मंगल, गुरु व शनि को
"	नागरिक शास्त्र	बुध व शुक्र को

ये चीजे मुख्य तौर से ध्यान देने योग्य हैं कि गणित के लिये सप्ताह में चार दिन रक्खे गये हैं। स्पेनी और अंग्रेजी भाषा प्रथानुसार ३-३ दिन, संगीत कला और ड्राइंग और दूसरे हाथ के कामों के लिये समय की मात्रा भिन्न २ वर्गों में भिन्न २ है। कम से कम एक घंटा संगीत के लिये अनिवार्य है। हाथ का काम सप्ताह में तीन घण्टे या इससे अधिक समय के लिये अनिवार्य है और इसमें लाख का काम, सूई का काम, मॉडल बनाना, खाना बनाना और दूसरी चीजें सम्मिलित हैं। मनोविनोद के घण्टे भी सबके लिये हैं।

पाठशाला में हर एक छात्रा का पूरा रिकॉर्ड (Record) रखा जाता है जो द्वितीय शिक्षा विभाग द्वारा नियत किये फार्म पर रहता है। इन फार्मों में हर विषय की हाज़िरी का खाना होता है जिसमें लिखा जाता है कि उसने इस विषय में क्या २ काम किये हैं। इसके अतिरिक्त कुछ और आवश्यक बातें भी लिखी रहती हैं जैसे कद, वजन, मां-बाप का व्यवसाय व छात्रा का चित्र आदि।

द्वितीय शिक्षा विभाग अपना केवल यही कर्त्तव्य नहीं समझता कि द्वितीय पाठशालाओं की संख्या बढ़े बल्कि वह अपना सबसे बड़ा काम यह भी जानता है कि शिक्षा की दशा पहिले की अपेक्षा अच्छी बने। इन पाठशालाओं में जो विषय पढ़ाये जाते हैं उनके पढ़ाने के अच्छे अच्छे प्रबन्ध करने का प्रयत्न किया जाता है। शिक्षा विभाग की ओर से द्वितीय प्रकार

की शिक्षा के उद्देश्यों की व्याख्या की गई है। उसकी भी जो इस श्रेणी पर पहुँच कर समाप्त हो जाती है और उसकी भी जो आगे जारी रहेगी। द्वितीय पाठशालाओं को यहां हर प्रकार की स्वतन्त्रता प्राप्त है वहाँ कम से कम नियम पूरे करने भी आवश्यक हैं और वे शिक्षा के वर्ष की अवधि, पढ़ाई के घण्टे, सामग्री, अध्यापकों के वेतन और उनके शिक्षण के योग्यता-स्तर से सम्बन्ध रखते हैं। शिक्षा विभाग की ओर से शिक्षण की योग्यता की जांच के लिये परीक्षाएँ होती हैं और ये परीक्षाएँ या तो अध्यापक स्वयं लेते हैं या उन पाठशालाओं के निरीक्षक लेते हैं।

सातवां परिच्छेद

दूसरी संस्थाएं

केन्द्रीय सरकार की ओर से इन संस्थाओं के अतिरिक्त जिनका पहले वर्णन आ चुका है, और भी बहुत सी शिक्षा-संस्थाएं स्थापित हैं। इन सब में जो चीजें सब से अधिक दिखाई देती वह उनकी सरलता और लाभप्रदता है। जहां तक प्रबन्ध और सामग्री का सम्बन्ध है, वे बहुत ही सीधी सादी होती हैं। प्रवेश और भाग लेने के लिये भी कोई बड़ा प्रतिबन्ध नहीं होता। असल चीज जो सबसे प्रथम होती है वह आवश्यकता है चाहे वह व्यक्तिगत हो, चाहे सामुहिक। मनुष्यों में थोड़ी बहुत योग्यता होनी चाहिये, फिर इनकी शिक्षा का प्रबन्ध मौजूद होता है। अध्यापक योग्यता में चाहे अपने शिष्यों से कुछ ही आगे हों परन्तु जो चीज उनमें बड़प्पन की होती है वह उनकी नेतृत्व की योग्यता है। जहां तक सीखने का सम्बन्ध है, अध्यापक और शिष्य एक दूसरे से सीख सकते हैं। इसके विपरीत वह अपने काम में चतुर हों जिस प्रकार चित्रकारी की पाठशालाओं में होता है। ऐसे लोग कुछ समय या पूरे समय के लिये काम करते हैं।

उद्योग शिक्षा की पाठशाला

मेक्सिको और दूसरे बड़े २ नगरों में वहां की स्थानीय कला

को सिखाने के लिये कला और व्यापार की पाठशाला होती है जो शिक्षा विभाग की कला और व्यापार की शाखा से सम्बन्ध रखती है। ये पाठशालाएं बहुधा दो प्रकार की होती हैं। इनमे जो अध्यापक रखे जाते हैं वे अपने अनुभव और बौद्धिक योग्यता के विचार से साधारण होते है। इन पाठशालाओं में दिन रात दोनों समय शिक्षा दी जाती है।

इन पाठशालाओं मे शिक्षा, उद्योग विशेषज्ञों से दी जाती है— कुछ पाठशालायें किसी मुख्य कला या उद्योग की शिक्षा के लिये प्रसिद्ध होती हैं। जिनके लिये उनके पास मे पूरी सामग्री होती है। वे इन कामों के लिये विशेषकर इसलिये ही प्रसिद्ध हैं कि उनका सम्बन्ध उस चीज के किसी कारखाने या फैक्टरी से होता है। इससे उन्हे अपने कामों में बड़ी सहायता होती है। उनका उद्देश्य केवल अपने उद्योग मे विशेष चातुर्य ही पैदा करना ही नहीं बल्कि उन्हे तमाम नवीन ढंगो से परिचित होना भी आवश्यक है जैसे पैदावार के लिये मण्डी की आवश्यकता है, कारखानों के लिए उचित स्थान, कच्चा सामान कहां से आये, लाने ले जाने का खर्च, दूसरे देशों के माल पर कर की आवश्यकता। इन उद्देश्यों और व्यवसायों की शिक्षा के साथ २ इनसे सम्बन्धित बौद्धिक ज्ञान भी दिया जाता है। ये पाठशालाएं कारखानों और कार्यगृह से निरन्तर सम्पर्क और सहयोग रखती हैं और इनसे केवल यह ही उद्देश्य नहीं कि यहां की शिक्षा समाप्त किये हुये लड़कों के लिये स्थान निकाले जाये, बल्कि इनसे इन पाठशालाओं

के पैदा हुये सामान के लिये खपत और निकासी का एक साधन भी हाथ आ जाता है। इन्हीं चीजों के बेचने से इन पर लागत निकालने के पश्चात् लाभ का एक भाग कार्य करने वाले विद्यार्थियों को भी मिलता है। कुछ स्थानों में उद्योग सिखाने की छोटी छोटी पाठशालाएं भी होती हैं जिनका महत्व स्थानीय होता है और जो प्राइमरी और द्वितीय श्रेणी से ऊंची नहीं होतीं। एक ऐसी ही पाठशाला का वर्णन बड़ा रोचक होगा। इसमें १०० बच्चे ६ वर्ष से १८ वर्ष तक की उम्र के हैं जहां तक सामग्री का सम्बन्ध है, बहुत ही साधारण है। परन्तु आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त है। इसमें कुछ ऐसे यन्त्र भी हैं जो बड़े २ कारीगर काम में लाते हैं। इसके साथ एक चमड़े का कारखाना भी है जिसमें जीन, लगाम, जूते, चप्पलें और बहुत सी चीजे तैयार होती हैं। नई वस्तुएं बनाने के अतिरिक्त इनमें मरम्मत का कार्य भी होता है। इस पाठशाला में साथ-साथ बुनाई का कमरा भी है जिसमें कई कांघे लगे हुए हैं। लड़के नई २ डिजाइन व तौलिये, रूमाल आदि तैयार करते हैं जिसमें काफी आमदनी हो जाती है। एक लुहारखाना भी है जिसमें निहाई, धौंकनी और दूसरे सामान होते हैं। लड़के मशीनों की मरम्मत का कार्य भी करते हैं। अच्छे कारीगरों की सहायता से यह लड़के तमाम वह कार्य करते हैं जो आसपास में कहीं नहीं हो सकता है। व्यापारी और कुछ गृहस्थ के कार्य भी सिखाये जाते हैं जिनकी साधारण जीवन में आवश्यकता पड़ती है। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसी चीजों की शिक्षा भी होती है जैसे

संगीत और शारीरिक शिक्षा व ड्राइंग आदि।

छात्र-निवास पाठशालाएँ

कुछ आवश्यकताओं के कारण कई छात्र-निवास पाठशालाएँ भी हैं परन्तु ऐसी पाठशालाओं का होना कोई अच्छा नहीं समझा जाता है। आजकल विचार तो यह है कि पाठशालाओं का अपने क्षेत्र या बस्ती के लोगों के जीवन से गहरा सम्बन्ध होना चाहिये और वे वास्तव में जीवन का एक अंग हों। इन पाठशालाओं का जो कार्य हो वह ऐसा हो कि उससे बस्ती की सामाजिक और आर्थिक अवस्था सुधरे। पाठशाला का कार्य बच्चों और प्रौढ़ों दोनों से बराबर सम्बन्धित हो। बच्चों को घरों से अलग रहने पर और सामाजिक जीवन से नाता तोड़कर शिक्षा देना नीति से किसी प्रकार मेल नहीं खाता। फिर भी कुछ आवश्यकताओं के आधार पर चार छात्र निवास पाठशालाएं स्थापित हैं जो केन्द्रीय शिक्षा विभाग की निगरानी में चल रही हैं। इनमें से एक और सब से पहली पाठशाला मेक्सिको नगर के बाहरी भाग मे है जिसका नाम 'हिंदी विद्यार्थियों का घर' है। इस पाठशाला के स्थापित करने का खास कारण यह देखना था कि कहां तक बच्चे शिक्षा से लाभ उठा सकते हैं और फिर यह दूसरे भागों के लिये आदर्श का काम दे।

बहुत से लोगों का यह विचार था कि इस तरह किसी एक जगह रखकर शिक्षा देना रुपया व समय का व्यर्थ नाश करना है। जो लोग शिक्षा मे जनतन्त्र के पक्षपाती हैं वे यह चाहते हैं कि सभी हिन्दियों के लिये शिक्षा की एक योजना बनाई जावे और उनको

विचार है कि इस प्रकार वे अधिक उन्नति कर सकेंगे। संक्षेप में यह है कि यह पाठशाला इस विचार से स्थापित हुई है कि यहां से हिन्दी लड़के शिक्षा पाकर अपने घरों को जायें और इस प्रकार वे अपनी २ बस्तियों के लिये नागरिक और आर्थिक दोनों प्रकार से लाभदायक सिद्ध हों।

इस पाठशाला में कोई २०० हिन्दी छात्र हैं जो जनतंत्र की तमाम २८ रियासतों से आये हैं। और कोई २५ या इससे भी अधिक परिवारों से सम्बन्ध रखते और इतनी ही भाषाएं बोलते हैं। वे यहां रहकर एक बड़े नगर के सभी प्रकार के नागरिक और सामाजिक प्रभाव ग्रहण करते हैं। वे खेल कूद और मनोविनोद के तमाम अवसरों से लाभ उठाते हैं। व्याख्यानों में जाते हैं, नाटकों में भाग लेते हैं, कारखाना, फैक्ट्री और कला-उद्योग के सभी बड़े बड़े केन्द्रों की सैर करते हैं। भिन्न २ जातियों और कामों के लोगों से मिलते-जुलते रहते हैं जिनमें स्पेनी मिली-जुली नस्ल के लोग व मेक्सिको की गोरी जातियां भी सम्मिलित हैं। इनकी इस पाठशाला में नये जीवन के तमाम सामान अर्थात् साफ-सुथरे रहने के कमरे, नहाने धोने के स्थान, स्वास्थ्यप्रद खाना, भांति २ के मनोविनोद। संक्षेप में यह है कि एक सभ्य जीवन की सभी आवश्यक वस्तुएं उपस्थित हैं। इस पाठशाला में कृषि और व्यापार की विशेषता के साथ साथ शिक्षा भी दी जाती है। इसके साथ इन्हें लिखना पढ़ना और दूसरी चीजें भी सिखाई जाती हैं। शारीरिक शिक्षा एक अनिवार्य विषय है, लड़कों को, कपड़े लत्ते और रहने-

सहने की तमाम चीजों की देख भाल और उनके उचित प्रयोग की, शिक्षा दी जाती है। कभी २ ऐसा भी होता है कि वे अपने घरों पर रहते हैं और फिर भी इन्हें कारखानों, फैक्ट्री और अन्य व्यवसायी स्थानों में कार्य सीखने और शिक्षा की पूर्ति का अवसर मिलता है। उन्हें पाठशाला के अन्दर व बाहर रुपये कमाने के अवसर दिये जाते हैं ताकि वे एक अच्छा और मितव्ययी जीवन बिता सकें। पाठशाला से सहानुभूति रखने वालों का विचार है कि इस 'छात्र निवास पाठशाला' का विद्यार्थियों के जीवन पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा है। भिन्न २ समुदायों और जातियों के विद्यार्थियों के बीच परस्पर सम्बन्ध बहुत अच्छे रहे हैं, खास तौर पर गोरे रंग वालों, मिश्रित जातियों और हिन्दियों के बीच। इसने यह भी सिद्ध कर दिया है कि खराब से खराब हालत में रहने वाले हिन्दियों की शिक्षा भी सम्भव है और यह कि वे नई आवश्यकता और नये वातावरण का साथ दे सकते हैं, जो बौद्धिक और शिक्षा सम्बन्धी परीक्षाएं होती हैं उनसे साफ प्रगट होता है कि हिन्दी बच्चे गोरी जातियों और मिश्रित जाति के बच्चों से किसी तरह पीछे नहीं हैं। इस पाठशाला से यह बात भी साफ हो गई है कि कुछ समुदायों में हिन्दी कितने लोक-प्रिय हो सकते हैं, जहां पहिले उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। छात्र निवास पाठशाला की यह त्रुटि नहीं है कि वे नई परिस्थितियों का साथ नहीं दे सकते बल्कि कठिनाई यह है कि वे फिर इन नई हालतों से बाहर निकलना नहीं चाहते और शिक्षा समाप्त करने के

पश्चात् अपनी बस्ती में जाकर अपने आर्थिक व सामाजिक सुधार के लिये कार्य करने को तैयार नहीं होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के डाइरेक्टरों का विचार यह है कि ग्रामीण पाठशाला द्वारा सुधार और राष्ट्रीय उन्नति का काम बड़ी आसानी से हो सकता है और छात्र निवास पाठशालाओं द्वारा एक २ करके विद्यार्थियों की शिक्षा समाप्त करना बहुत ही दुःखदायी व असंतोषजनक रीति है। संभव है दूरी पर रहने वाली पिछड़ी जातियों में स्थानीय पाठशालाएं अधिक सफल न हों और इस अवस्था में यही छात्र-निवास की विधि सामूहिक कार्यों के लिये अधिक उपयोगी सिद्ध न हो। परन्तु सब से मनोरंजक छात्र निवास पाठशाला सेनगोबरीलितो (Sangobreleto) में है जो मेक्सिको नगर के दक्षिण में शान्त महासागर के तट पर स्थित है। चूंकि यह मेक्सिको के पठार से बाहर और दक्षिण की ओर है इसलिये यहां की जलवायु और पैदावार बड़ी सीमा तक गर्म देशों की भांति है। जहां ३५ छात्रों मे एक निरीक्षक और अध्यापकों की निगरानी में एक पाठशाला स्थापित की है जिसका नाम है "सेनगोबरीलितो (Sangobreleto) के हिन्दी लड़कों का घर"। यह पाठशाला जैसा कि इसके नाम से पता चलता है, वास्तव में उन लड़कों का घर है। उन्होंने स्वयं यह मकान और इसका सभी सामान जैसे ईंटे और खपरेल आदि सब अपने हाथों से बनाया है। यह पाठशाला कुछ ही मास में बन कर तैयार हो गई। मेक्सिको में पाठशाला स्थापित करने के लिये भवन और सामग्री की आवश्यकता नहीं होती। एक अध्या-

एक और कुछ लड़के—बस पाठशाला स्थापित हो गई। अतः यह पाठशाला भी इसी प्रकार बनी और इसके लिये किसी के खास प्रबन्ध और सामग्री की आवश्यकता नहीं हुई। परन्तु इस पाठशाला की स्थापना एक खास सामाजिक अवस्था के आधीन हुई। मेक्सिको के कुछ भागों में एक प्रकार का चर्म रोग हुआ करता है जिसका कारण आज तक मालूम नहीं हो सका है। इस रोग में शरीर की खाल का रङ्ग अजीब तरह का हो जाता है। रोगी को और कोई कष्ट नहीं होता परन्तु लोग इन बस्तियों में जाते हुये डरते हैं। इसी कारण इन क्षेत्रों में पाठशालाओं की संख्या भी कम है। ये छात्र निवास पाठशालाएं इस क्षेत्र की एक मात्र पाठशालाएं हैं। जो इनकी तमाम शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करती थीं और केन्द्रीय सरकार के स्वास्थ्य विभाग की सहायता से बच्चों की इस बीमारी के उपाय भी कर रही थीं। इस पाठशाला में इस रोग के निदान का पूर्ण प्रयोग भी चल रहा है। आशा की जाती है कि विद्यार्थी न केवल इस पाठशाला से शिक्षित होकर और इस रोग से मुक्त होकर अपने घरों को जायेंगे, अपितु बस्ती वालों को भी लाभ पहुंचायेंगे।

पाठशाला के सम्मुख यह उद्देश्य भी है कि कुछ ऐसे अध्यापक तैयार करके भेजे जो अपनी बस्तियों में जाकर नई पाठशालाएं खोले। प्रारम्भ में जब लड़के इस पाठशाला में आये तो उनके पास कोई वस्तु न थी, न बिस्तर न जूता। पहनने को एक जोड़ा वस्त्र और ओढ़ने को एक कम्बल था। उनके लिये सबसे पहिला

कार्य चार-पाई जुटाना था जो उन्होंने स्वयं बनाई, फिर बाद में उन्होंने कुछ ऐसी चीजें बनाईं जो बिक सकें। इससे उन्होंने दूसरी जोड़ी कपड़ों की खरीदी। इस तरह धीरे २ वे बहुत सी चीजें तैयार करने लगे जैसे जूते, चमड़े का सामान, मिट्टी के बर्तन, टोपियां व कुर्सियां आदि। इस सामान के बेचने से नतीजा यह हुआ कि वे बहुत साफ सुथरे रहने लग गये। इस बीच भवन का निर्माण भी आरम्भ हुआ और इसके साथ २ पाठशाला का सामान भी जैसे बैंचें, डेस्कें, कुर्सियां और लिखने पढ़ने की अन्य वस्तुये। पाठशाला का भवन बहुत सुन्दर और छोटा सा है जिसमें एक बड़ा कमरा है और इसके साथ एक कमरा पाठशाला के निरीक्षक के रहने के लिये है। इसके एक सिरे पर एक छोटा सा रसोई घर है। बड़ा कमरा रहने-सहने, खाने-पीने और पढ़ाई व अन्यान्य भिन्न २ कार्यों के प्रयोग में आता है। पाठशाला का भवन जिस भूमि पर है, वह एक व्यक्ति की भेंट है। इसका एक भाग कृषि के कार्य में आता है जिससे यह आशा है कि भविष्य मे भोजनादि का बहुत सा सामान इसी भूमि पर उत्पन्न हो सकेगा। कुल पांच अध्यापक हैं जिनका वेतन केन्द्रीय सरकार देती है। लड़कों की पैदावार से आय दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही है जिससे पाठशाला के काम के क्षेत्र और दूसरा सामान बढ़ने की संभावना रखी जाती है। इसके अतिरिक्त दो और छात्र निवास पाठशालाएं हैं जो ऐसे स्थानों में स्थित हैं जहां आस-पास के क्षेत्रों से लड़के आ सकें। इनके रहने-सहने, खाने-पीने और अन्य बातों में इस बात का

विशेष ध्यान रखा जाता है कि उनका जीवन-स्तर साधारण जीवन से ऊंचा हो और इसके साथ पास पड़ौस की अवस्था भी उनके ध्यान में रहे। ये बातें इस विचार को सामने रखते हुये की जाती हैं कि छात्र-निवास पाठशालाओं के लाभ पूरे २ प्राप्त हों और छात्रगण इनकी हानियों से बचे रहें और वे अपनी बस्तियों में जाकर लोगों के लिये लाभ और सुख का कारण बनें।

चित्रकारी की पाठशालाएं

चित्रकारी की पाठशालाएं बच्चों और प्रौढ़ों दोनों के लिये होती है, जिनमें कोई शुल्क नहीं लिया जाता। ये पाठशालाएं कभी तो खुले मैदान मे होती हैं और कभी कोई भवन मिल गया तो उसमें। ये पाठशालाएं नगर और गांव दोनो स्थानों मे होती हैं। यहां बच्चे और युवक दोनो आते हैं और अपनी २ रुचि और इच्छानुसार चित्र बनाते हैं। इनसे कोई पूछताछ नहीं होती और आने के लिये कोई नियम और प्रतिबंध नहीं। नियम यही है कि जो चित्र बनाने की रुचि रखते हैं वही आवेंगे और जिनमे इस कला की योग्यता है, वे ही इन पाठशालाओं मे ठहरेंगे। कला की शिक्षा का कुल सिद्धान्त तीन शब्दों में विवरण किया जाता है। उत्तेजना, प्रोत्साहन व टीकाटिप्पणी। यद्यपि अन्तिम भाग की बहुत कम आवश्यकता होती है, इसलिये कि अध्यापकों का यह विचार है कि कला का काम स्वाभाविक रूप से व्यक्तिगत और स्वात्मक होता है, इसलिये उस पर टिप्पणी कठिनाई से हो सकती

है और जहां तक ढंग का सम्बन्ध है, वह टीका टिप्पणी का विषय नहीं वन सकता।

इस सिद्धान्त के आधार पर यहां के वच्चों की जो कला है, उसने अभी हाल में वहुत से लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। वहुत से कलाकारों का विचार है कि मेक्सिको के वच्चों में कला की स्वाभाविक रुचि विद्यमान है। ये पाठशालाएं इनकी इस योग्यता को वढाने और कार्य में लाने का प्रयत्न कर रही हैं। इसी प्रकार एक पाठशाला शिल्प-कला के लिये भी है।

इन पाठशालाओं के अतिरिक्त यहां कला व उद्योग की जो संस्थाएं हैं इनमें भी चित्रकला, शिल्पकला आदि के कार्य होते है और उन्हें अपनी इन योग्यताओं से कार्य लेने के अवसर मिलते हैं जिनके प्रकाश में आने का शताब्दियों की निर्धनता के कारण अवसर नहीं मिला। जिन वच्चों को अपने मामूली पाठशाला के कार्यों मे इसके प्रगट करने का कभी अवसर नहीं मिलता, ये पाठशालाएं इनकी इस कमी को पूर्ण कर देती हैं।

खुली हवा के थियेटर

इस वात का सवसे अच्छा उदाहरण कि किसी अध्यापक की उपज किस प्रकार समस्त शिक्षा संगठन का अंग वन जाती है आपके मेक्सिको में खुली हवा के थियेटरों में सवसे अधिक मिलेगी। सन् १९३० में एक अध्यापक के हृदय में यह विचार उत्पन्न हुआ कि लोगों को मद्यपान से हानियां समझाने के लिये नाटक का नियम ग्रहण किया जावे। फलतः इसने

कई एक छोटे छोटे नाटक लिखे और अपने छात्रों को साथ लेकर खुले मैदान में इनके खेलने का प्रबन्ध किया। ये नाटक आशा से अधिक सफल सिद्ध हुये और केन्द्रीय शिक्षाधिकारी एवं अन्य रुचि रखने वालों के प्रोत्साहन से इनको इतनी लोकप्रियता प्राप्त हुई कि दो ही साल के भीतर सम्पूर्ण ग्रामीण पाठशालाओं में इनकी संख्या चार हजार पहुंच गई।

खुली हवा के ये थियेटर भिन्न २ पाठशालाओं मे भिन्न २ स्थान रखते हैं। कहीं तो इनके लिये केवल एक चबूतरे और उसके ऊपर छायादार पेड़ के पास होता है और कहीं ये अपने सामान के विचार से अच्छे सुन्दर थियेटर हाल मालूम होते हैं। कुछ थियेटरों ने तो किसी पुराने गिरजे की दीवारों को अपना पिछला भाग बना लिया है। कुछ ने बहुत अच्छे ढंग की चित्र-कला और रंगाई से काम लिया है। इन थियेटरों के सामान और सजावट का मामला बड़ी सीमा तक अध्यापकों की उपज और उसका आविष्कार करने की योग्यता का परिणाम है। कभी तो इन्हें अपने कार्यों के सम्बन्ध में कड़ा परिश्रम करना होता है जिससे अनुमान होता है कि इस नई शिक्षा का यहां के लोगों पर कहां तक प्रभाव है और वे इसके लिये कितना क्या करने को तत्पर हैं। खुली हवा के थियेटरों का यह प्रयोग यहां के लोगों के स्वभाव और वातावरण के अनुकूल है। लोग अधिकतर घरों के बाहर समय व्यतीत करते हैं और खुली हवा में उठते बैठते हैं। सदैव उनके सभी मनोविनोद व उत्सव बाहर ही होते रहते हैं

और खुली हवा के थियेटरों के द्वारा इनकी शिक्षा कमरे से बाहर होती है। जलवायु में समशीतोष्ण प्रकृति से प्रेम व मितव्यता का स्वभाव इसको और भी सफल बना देते हैं। बस्ती के जो मनोविनोद होते हैं वे भी इन शिक्षा-योजनाओं के साथ पूरे किये जाते हैं जिससे एक तो इनमें एकता उत्पन्न होती है दूसरे इनके मनोविनोद का स्तर ऊंचा होता है।

नागरिकता के प्रचारक इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अध्यापकों की सहायता से लोगों में स्वयं हिल मिल कर काम करते हैं। हर टोली में एक आदमी होता है जो इन मनोविनोद की बातों से भलीभांति परिचित होता है और कला, संगीत व नाटक के साथ शारीरिक शिक्षा के कार्यों का भी जानकार होता है। इन थियेटरों की सहायता से नगर-प्रचारकों को अपने कार्यों को फैलाने व स्थिर रखने में बहुत सहायता मिलती है। कला, नाटक और संगीत ये चीजें हैं जो हिन्दियों को विशेष रूप से पसन्द हैं। थोड़ी सी निगरानी से इनके मनोविनोद के स्तर और भी ऊंचे किये जा सकते हैं। इन थियेटरों से बहुत कुछ शिक्षा और प्रचार का कार्य भी लिया जाता है जो समाज-सुधार के साधन बन सकते हैं। इन थियेटरों में कभी २ कठपुतली के तमाशे भी दिखाये जाते हैं। एक तमाशे का शीर्षक बहुत रोचक था "जो बीस वर्ष की आयु में धनवान नहीं हो सकता वह ४० साल में खत्म हो जायेगा।" इसके अलावा दो और तमाशों के शीर्षक भी ऐसे ही हैं जिनसे इनके कार्यों का पता चल सकता

है। एक का शीर्षक है 'जमीन और पाठशालाएं' और दूसरे का 'अध्यापक क्या कर सकते हैं'; इन दोनों तमाशों का उद्देश्य लोगों के अन्दर क्रांति की भावना उत्पन्न करना और चारित्रिक व सामाजिक कुरीतियों को दूर करना है।

कठपुतली के तमाशों के अलावा इन थियेटरों में गाना-बजाना व नाच रंग की सभाएं भी होती है जिनसे मेक्सिको वालों को विशेष रुचि व दिलचस्पी है। नाटक बहुधा लोगों के जीवन, क्रांति की घटनाओं और भिन्न २ अवस्थाओं पर आधारित होता है और इनमें से स्वयं बहुत से अध्यापकों के लिखे हुये होते हैं। ये नाटक केन्द्रीय शिक्षा-विभाग की ओर से छपवाये जाते हैं और इन सबको बांटा जाता है ताकि उनमें लोगों की रुचि और अधिक बढ़े। इस समय विभाग की ओर से एक व्यक्ति विशेष रूप से खुली हवा के थियेटरों, उनके प्रयोग और योजनाओं का अध्ययन कर रहा है और शीघ्र ही इसके परिणाम लोगों के सामने आयेंगे।

क्रांतिकारी पाठशाला

मेक्सिको नगर के बाहरी भाग में एक क्रांतिकारी पाठशाला है जिसके देखने से अनुमान होता है कि राज्य, प्रजा की शिक्षा के लिये क्या २ करना चाहता है। पाठशाला का भवन अभी हाल में ही कई लाख की लागत से बनकर तैयार हुआ है। इसमें कोई ५००० लड़कों के लिए कमरे, कार्य गृह, खेल के मैदान थियेटर व तैरने के तालाब बने हैं और इतने ही लड़के पास के

समय पाठशाला में आते हैं। इस पाठशाला में 'बाल की बाड़ी' से आठवीं कक्षा तक शिक्षा होती है और शिक्षा में सिद्धांतिक और रचनात्मक दोनों प्रकार की शिक्षा सम्मिलित हैं। पाठशाला के भवन के दोनों ओर पुस्तकालय हैं, जिनमें उच्च कोटि का सामान लगा हुआ है। बीच के हाल में और कमरों में प्रसिद्ध कलाकार डिगोरिवेरा के बनाये हुये चित्र हैं। बरामदों और दालानों मे बड़े आकर्षक पोस्टर (Poster) लगे हुये हैं जिससे पाठशाला की क्रांतिकारी रुचियों का पता चलता है। एक पोस्टर में एक लाल हिन्दी का चित्र है जिसके गले में एक पादरी शीशी से दवा पिला रहा है और इस शीशी पर मोटे अक्षरों से लिखा हुआ है "धर्म" और जिसके नीचे लिखा हुआ है "विष"। इस पोस्टर पर जो शब्द लिखे हैं वे ये हैं कि धर्म एक आत्म-औषधि है जो मजदूरों को सुस्त और बीमार बना देती है। धर्म की भांति युद्ध और पूंजीपतियों के विरोध में भी इसी प्रकार के पोस्टर लगे हुए हैं।

यह पाठशाला केवल मजदूरों और कारीगरों के बच्चों और प्रौढ़ों के लिये है। दिन में यहां सहस्रों बच्चे बहुत प्रसन्नचित्त घूमते दिखाई देते हैं और रात को इतने ही प्रौढ़ और बूढ़े पढ़ने के लिये आते हैं।

मजदूर-नगरी

पाठशाला के समीप मजदूरों के रहने के लिये मकानात हैं जो केन्द्रीय सरकार ने इन्हें अपनी ओर से बनाये हैं। ये मका-

नात सब ईंट और चूने के अति सुंदर बने हुये हैं। क्षेत्रफल के अनुसार ये दो तरह के हैं (१) वे जिनमें दो सोने के कमरे हैं, एक उठने बैठने का कमरा है, एक छोटा सा खाना खाने का कमरा है, एक रसोई और एक स्नानगृह है। स्नानगृह में हर समय ठंडे और गर्म दोनों प्रकार के जल का प्रबन्ध रहता है। (२) इस प्रकार के मकानात में सोने का एक और कमरा होता है जिसके ऊपर एक छत होती है। दोनों प्रकार के मकानों में पीछे बगीचे होते हैं और हर एक मे एक रेडियो, एक चूल्हा और अन्य आवश्यक वस्तुएं होती हैं। जो लोग इन मकानों मे से किसी को खरीदना चाहे उन्हें ढाई हजार से ३ हजार तक देना होता है और २५ या ३० रुपये मासिक के हिसाब से अदा करने होते हैं। ये लोग इन्हीं मकानो में इस तरह प्रसन्नचित्त रहते हैं जैसे अपने बनाये हुये मकानों मे। इन मकानों के साथ पार्क, मैदान, तैरने के तालाब व पाठशालाएं होती हैं। वे अपने ढग की बिल्कुल नई होती हैं। देखने मे रहने-सहने के मकान मालूम होती हैं, जिनके साथ उठने-बैठने के कमरे, खाने के कमरे, बर्तन रखने के कमरे व बाग आदि सब कुछ होते हैं। मजदूरों के बच्चे सुबह से आते हैं और सायं के ५ बजे तक रहते हैं ताकि उनके माता पिता को दिन-भर काम का समय मिल जाय। बच्चों को तीनों समय का खाना पाठशाला से ही मिलता है और उनमें से बहुत से उनकी तैयारी और पकाने मे सहायता देते हैं। माता पिता अधिक से अधिक चीज का मूल्य चुकाते हैं। शेष खर्चा केन्द्रीय-सरकार देती है।

यह थोड़ी रकम इसलिये ली जाती है कि माता पिता को यह विचार हो कि इस काम मे वे स्वयं भी हाथ बंटा रहे हैं।

एक ओर बालकों की बाड़ी देखी गई जिसमें कोई १० बीघे क्षेत्रफल का एक अत्यन्त सुन्दर बाग था। बच्चे किसी पेड़ की छाया के नीचे मिलकर काम करते है—इनके काम बहुत खुली हवा में होते हैं।

इसके अतिरिक्त उनके मनोविनोद के लिये पक्षी, खरगोश और दूसरे जानवर पले होते है। छोटे बच्चों की यह पाठशाला प्रकृति और प्रकृति की कृति के आधार पर चलती है।

इन वस्तुओं की लोकप्रियता का अनुमान इससे हो सकता है कि उस समय कोई भी मकान खाली नहीं था और लोगों का आग्रह और मकानों की ओर था।

आठवाँ परिच्छेद

"फरमीन"

(बच्चों की प्रथम पुस्तक)

शिक्षा विभाग के तमाम कार्यों और शाखाओं की व्याख्या के साथ २ यह अनुचित न होगा यदि उनकी एक पाठ्यक्रम की पुस्तक का संक्षिप्त वृत्तांत और उसके विषय की कुछ जानकारी इस स्थान पर कर दी जावे, जिससे मेक्सिको की शिक्षा सम्बन्धी भावनाओं के ज्ञान में कुछ सहायता मिले।

फरमीन मेक्सिको भाषा की पहली पुस्तक है जो क्रांति के बाद से बच्चों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित की गई है। यह भिन्न २ लेखकों के गद्य व पद्य के चुने हुये पाठों का संग्रह नहीं है जिसमें कोई सम्बन्ध और विचारों की शृंखला न हो, और न यह कोई चरित्र सम्बन्धी शिक्षा का कोई संग्रह है जिसमें अरुचि की बातें बालकों के लिये लिखी हो। यह तो बालक के सम्पूर्ण जीवन का एक चित्रपट है जो बहुत ही स्वच्छ व सादी भाषा में मनोहर ढंग से वर्णित है। और जिसमें मेक्सिको के तमाम बच्चे अपने अपने चित्रपट देख सकते हैं। यह न केवल एक बच्चे के जीवन का वृत्तांत है बल्कि उस युग के सभी ऐतिहासिक और सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन का चित्र है।

फरमीन न केवल भाषा की शिक्षा का साधन है बल्कि बालक के लिये नागरिक एवं राजनीतिक ज्ञान पैदा करने का एक बड़ा यन्त्र है जो किसी कहानी के रूप में नहीं बल्कि वास्तविकता से लिखा गया है। उदाहरणार्थ इसके कुछ भागों का अनुवाद निम्न प्रकार है :—

(१) पहला भाग (१९१०)

फरमीन एक स्वस्थ बुद्धिमान चतुर बालक है जो एक छोटे से गांव में पैदा हुआ है।

उसका बाप पेड्रो एक किसान है जो लाल हिन्दी जाति से है। जूना उसकी मां एक परिश्रमी और सीधी सादी स्त्री है; उसका मकान साधारण फूस का बना एक छप्पर है।

वह सवेरे से शाम तक अपने बाप के साथ काम करता है, इसी प्रकार उसके वस्त्रों और उसके मकान का वृत्तांत चलता है। इसके बाद उसके कारिन्दे का वृत्तांत चलता है।

उस भूमि का स्वामी, जहां फरमीन और उसके पिता काम करते थे, उस स्थान पर नहीं रहता था।

वह कभी २ यहां आया करता था और अपने कारिन्दों के अतिरिक्त और किसी से कोई सम्बन्ध न रखता था।

वह नगर में बहुत ही वैभव से रहता है और खूब प्रीतिभोज उड़ाता है।

उसका कारिन्दा एक बहुत ही क्रोधी मनुष्य है जो हर समय नाक-भौं चढ़ाये रहता है।

वह कभी मुस्कराता नहीं है।

न कभी दिन भर के काम से खुश होता है।

दिन भर का काम उसे हर समय थोड़ा लगता है।

वह कभी कभी इतने क्रोध में आ जाता है कि मजदूरों को मार बैठता है।

हर मनुष्य उससे डरता है, कोई उसके विरुद्ध में कुछ कार्य-वाही नहीं कर सकता।

(४)

फरमीन फावड़ा हाथ मे लिये हुये शरीर को झुकाये पृथ्वी खोदता है। और उसको हर दिन पहाड़ मालूम होता है। वह दस घण्टे से ज्यादा रोजाना काम करता है। बीच मे थोड़ी देर खाना खाने के लिये काम छोड़ देता है।

दोपहर मे सूर्य की गरमी से हाथ और पांव झुलस जाते हैं।

और माथे से पसीना टपकने लगता है।

वह हाथों से उसे पोंछता जाता है और कभी २ काम से उन का दिल बैठ जाता है।

वह थोड़ी २ देर बाद रुक जाता है और अपना सिर उठाता है और चारो ओर एक दृष्टि डालता है। वह पेड़ व छोटे २ फूल व चिड़ियां व बैलों के धीरे २ उठते हुए पैर उन बैलों का जुगाली करना और हल चलाना आदि देखता है।

सूर्य अस्त होने लगता है।

दिन का कार्य समाप्त हो जाता है।

और वह अपने फावड़े, कुदाली लिये दिन भर का थका हुआ घर की ओर प्रस्थान करता है।

(५)

आज मजदूरी बँटने का दिवस है।

सप्ताह तक फरमीन के जीवन में कोई अन्तर नहीं हुआ था।

तीन बजे के समय सभी मजदूर कारिन्दे के मकान के सामने इकट्ठे होना शुरू करते हैं।

कई एक के हाथ में आज भी कुदाल-फावड़ा है, कोई कधे पर चादर डाले हुए है।

ये सब पृथ्वी पर दो-दो, तीन-तीन की टोलियां बनाये हैं और धीमे स्वर में एक दूसरे से बातचीत कर रहे हैं। फरमीन अपने पिता के साथ आता है। उसके हाथ में भोजन का पात्र है। और एक में जल।

और दीवारों से सहारा लेकर एक ओर बैठ जाता है।

वह अपना मस्तक झुकाये हुए है और न जाने क्या विचार कर रहा है। कारिन्दा इन मनुष्यों को एक एक करके बुलाता है और उनका वेतन उन्हें देता है।

जब फरमीन अपने पिता का नाम सुनता है तो वह अपनी दृष्टि ऊपर उठाता है और क्या देखता है कि कारिन्दा उसको थोड़े पैसे देता है और कठोर वाणी से बोलता है।

बाकी पैसे अगले सप्ताह में मिलेंगे।

इस भाँति वह अपने घर का वृत्तांत वर्णन करता चला जाता है और इसके बाद दूसरे वृत्तांतों का वर्णन है।

(७)

एक दिन जबकि आकाश का रंग स्वच्छ था और खेत हरे भरे दिखाई दे रहे थे, समीप के गांव से कुछ मित्र आये जहाँ पर फरमीन और उसके पिता दोनों काम कर रहे थे।

वे उससे कहने लगे कि कल इतवार को जबकि हम समीप के गांव में लेन-देन के लिये गये हुये थे तो हमने कई फेरी वालों को यह कहते सुना कि क्रांति बड़े जोर की है और राज्य के हाथ-पांव ठंडे हो गये हैं और बहुत शीघ्र सब चीजें बदल जावेंगी। कोई निर्धन नहीं रहेगा और कोई मजदूर नहीं होगा और कोई बेगार नहीं लेगा।

फरमीन के यह बात कुछ समझ में नहीं आई।

उसी दिन फरमीन के पिता ने यह निश्चय किया कि आगामी इतवार को वह स्वयं नगर जावेगा।

और सप्ताह भर तक काम निम्न लिखित कार्यक्रम की भांति योंही चलता रहेगा।

शनिवार के दिन जो कि मजदूरी मिलने का दिवस था कारिन्दे ने सवेरे ही सबको मजदूरी दे दी और किसी को कुछ गाली गलोच न दी।

वह आज प्रसन्न चित्त था।

उस की बत्तीसी खुली हुई थी।

फिर भी वह अपनी परेशानी को छुपा नहीं सकता था।

इसके बाद उनकी नगर में जाने की तैयारी। रविवार के दिन वे नगर जाते हैं और क्रांति की कहानियां सुनकर लौट आते हैं।

(१०)

फरमीन और उसका पिता दोनों एक वृक्ष की छाया के नीचे विश्राम कर रहे थे कि उन्होंने एक मजदूरों की पार्टी को अपनी ओर आते हुये देखा।

वे बड़े वीर और साहसी मनुष्य थे, वे इनसे कहने लगे—

"पेड्रो हम वास्तव में आजाद हैं, जो पृथ्वी हम जीतेंगे वह हमारी होगी। हम पर कोई अफसर गुमाश्ता न होगा। जो हमारे गाढ़े पसीने की कमाई रख लिया करेगा। कोई हमें तहसीलदार या डिप्टी साहब के सम्मुख नहीं कर दिया करेगा जो हमें भरती में भेज दिया करेंगे।"

"फरमीन को अपनी मां के पास छोड़ दो और आओ हमारे साथ क्रांति की लड़ाई में प्रस्तुत हो। जब हम सफल हो जावेंगे तो तुम्हें एक भाग पृथ्वी का मिलेगा जो तुम्हारा होगा और जिसे तुम स्वयं बोवो और जोतोगे।"

फरमीन के पिता ने जब यह सुना तो बड़ा आश्चर्ययुक्त हो गया और फरमीन भी बहुत आश्चर्यचकित हुआ, उसकी समझ में यह नहीं आया था कि पृथ्वी, तहसीलदार व क्रांति ये सब बातें क्या हैं।

फरमीन का पिता यह समझने लगा कि शायद संसार पलटा जा रहा है।

इन सब बातों से इसके मन में वे सब दुःख, निर्धनता, भूख और वस्त्रों के अभाव जो उसकी स्त्री और बच्चे बड़े समय से भोगते आ रहे थे, सबके सब उसकी दृष्टि के सामने बादलों की भांति उठने लगे। वह देखने लगा कि कारिन्दा किस प्रकार उनके परिश्रम से फल खा रहा है। तहसीलदार और डिप्टी उनके निकट सम्बन्धियों को किस तरह जेल भेज रहे हैं आढ़ते उसके खाने-पीने के कष्टों का कारण है।

उसकी काल्पनिक दृष्टि के आगे यह नजर आने लगा कि कारिन्दे को फांसी पर चढ़ा दिया गया है। तहसीलदार को गोली से उड़ा दिया है और आढ़तों में आग लगा दी गई है।

"तुम चल रहे हो या नहीं", वे उससे पूछने लगे।

"तुम्हारी स्त्री तुम्हारे आने तक पेट का सामान किसी न किसी प्रकार कर लेगी।"

"फरमीन कुछ न कुछ काम कर ही रहा है और दो चार पैसे कमा ही लेता होगा। हम सब भी अपनी स्त्री बच्चों और पशुओं को छोड़ छाड़ कर जा रहे हैं यदि तुम न गये तो कारिन्दा तुम पर हर हालत में हमसे गुप्त मेल जोल का आक्षेप लगायेगा और ज्यों ही तहसीलदार साहब को पता चला उन्होंने तुरंत ही तुम्हें सेना में भर्ती किया अथवा रसदबेगार लगाई"।

"पेड्रो, अब तुम एक और निर्णय करलो।"

"क्रांति बढ़ती जा रही है।"

पेड्रो ने कुदाल और फावड़ा फरमीन को दे दिया और कहा—

"अपनी माता से कहना मैं जल्द ही आऊँगा, उसे यह भी कहना कि मैं अपने कुछ साथियों के साथ जा रहा हूँ। और वह घबराये नहीं।"

फरमीन अपने घर की ओर बढ़ा।

और पेड्रो ने क्रांति का पथ ग्रहण किया।

इसके बाद क्रांति अपनी पूरी शक्ति के साथ शुरू हुई परन्तु राज्य ने साधारण सुविधाएँ दे कर क्रांतिकारियों के साथ संधि करली। फरमीन के पिता इस संधि से संतुष्ट नहीं थे उनका विचार था कि परिस्थिति अब भी वैसी ही है।

(१२)

फरमीन के पिता ने देखा कि उसका स्वप्न तो सिद्ध नहीं हुआ। वह फिर अपनी झोंपड़ी को लौटे और एक ऐसे मालिक की सेवा की जो नगर में निवास करता है। और हर प्रकार के आमोद प्रमोद में लीन रहता है। फिर उसी कारिन्दे का मुख देखे, तहसीलदार की कठोरता फिर पहले से भी अधिक सहन करे। आह! आढ़तें टूट जातीं, अब मजदूरी उससे भी कम मिलेगी और वह उस भूमि का स्वामी भी न होगा जो उसे दी गई है लेकिन नहीं, वह अब फिर ऐसा नहीं करेगा।

वह अपनी बंदूक अब नहीं छोड़ेगा, वह उसे सदैव अपने साथ रखेगा। वह अपनी स्त्री और फरमीन से उस समय तक नहीं

मिलेगा जब तक वह उनसे यह नहीं कह सके।

"यह भूमि मेरी है! कोई मुझ से यह नहीं ले सकता। भूमि की सभी पैदावार हमारी होगी चाहे इसके लिये वह हमें वहीं क्यों न गाढ़ दे।"

फरमीन के बाप ने ये बातें अपने साथियों में से किसी से नहीं कहीं और देखता रहा कि क्या होता है।

यह विचार करके फरमीन के पिता चुपके से दक्षिण की ओर चल दिये और वहां जाकर क्रांतिकारियों की उस टोली में सम्मिलित हो गये जो सच्ची क्रांति करना चाहते थे।

इस बीच में फरमीन दिन प्रति दिन बड़ा होता गया और अब वह एक युवक हो गया।

उसकी माता बराबर काम करती रही और कभी २ जब उसे कुछ कठिनाई होती तो उसके पड़ोसी उसकी सहायता कर देते।

अब कारिन्दा बदल गया था परन्तु रोज की उजरत का वही नियम था।

फरमीन जानता था कि उसके पिता लड़ने फिरते हैं परन्तु वह यह नहीं जानता था कि वह कहां हैं और यदि वह जानता भी तो उससे पत्र-व्यवहार नहीं कर सकता था।

वह सोचने लगा—'आह! यदि मैं लिखना-पढ़ना जानता तो मैं अपने बाप को एक पत्र लिखता परन्तु वह यह नहीं समझ सका कि यदि वह लिखना पढ़ना भी जानता तो वह उन्हें पत्र नहीं भेज सकता था।

फिर क्या मैं जाऊं और अपने पिता के साथ युद्ध में सम्मिलित हो जाऊँ परन्तु वह अभी युद्ध के योग्य नहीं था। फिर उसकी माता क्या करेगी!

फिर भी उसके मन से यह चिन्ता न हटी।

इस बीच में मेक्सिको के उत्तर में जो राज्य स्थापित हुआ था उसे जनता ने समाप्त कर दिया परन्तु दक्षिण के भाग में वे ऐसा न कर सके और उसमें सब से बड़ा हाथ फरमीन के पिता पेड्रो का था।

फरमीन के पिता अपने युद्ध में किये हुये महाकार्यों के आधार पर एक सैनिक सरदार हो गया था।

उसके साथ देशभक्त साथियों की एक छोटी सी टोली थी—उसकी शक्ति का कोई मुकाबला नहीं कर सकता था।

उसके साथी उस पर बड़ी श्रद्धा रखते थे और आज्ञाकारी थे। फरमीन के पिता ऐसी समस्त भूमि को जिस पर कोई अनुचित अधिकार जमा लेता था, कोई छोड़कर चला जाता था—तो किसानों में बांट देते थे। उन्हें फिर से लौटा देता जिनसे कि यह ब्याज और ऋण या पहले से मूल्य के तौर पर ले ली गई थी—बहुधा ऐसा हुआ कि जो भूमि उन्हें मिली, वह युद्ध के कारण खाली पड़ी रही।

इस प्रकार वह काफी समय यक युद्ध करता रहा। युद्ध के इस न्यायानुकूल होने के फलस्वरूप देश में बहुत सी नई २ संस्थाएं 'भूमि और न्याय' के नारे के समर्थन में खड़ी हो गईं।

जिन्होंने आज्ञापालन नहीं किया उनमें स्थाई पूंजीपतियों का वर्ग था। विदेशी पादरी सैनिक आधिपत्य के साथ थे जिसके सदैव यह प्रयत्न रहे कि इस राज्य का विध्वंस कर दें और किसानों, श्रमिकों के इस आन्दोलन को छिन्न भिन्न करदे।

और उन्होंने कुछ समय के लिये इसमें सफलता भी प्राप्त कर ली थी।

(१८)

फरमीन और उसकी माता उस मकान मे रहते थे जो उसने (पेड्रो) ने बनाया था।

यह समझ कर कि फरमीन का पिता क्रांति के साथ है कारिन्दो ने उन्हे वहां से निकाल दिया और घर को जलवा डाला।

उन्होंने एक और मकान में जाकर शरण ली और प्रतीक्षा करते रहे (इसी प्रतीक्षा में रहे) कि पेड्रो कब लौटता है।

फरमीन अब एक युवक था।

वह समझने लग गया था कि क्या हो रहा है और उसके पिता क्यों क्रांति में सम्मिलित हो गये हैं।

उसको वह सब स्थान याद आ रहे थे जहां २ वह अपने पिता के साथ कार्य कर चुका था और अब उसे स्वयं काम के खोज मे एक बाग से दूसरे बाग में जाना पड़ता था।

वह दुःखी रहा करता था और अपने को बड़ा अभागा समझता था कि उसके रहने तक का कोई स्थान नहीं है।

उसके पास भूमि का एक टुकड़ा भी नहीं जिस पर वह अपना

झोंपड़ा ही बना सके, अनाज बो सके व पशु पाल सके।

बाग का मालिक उसे पेड़ से लकड़ियां भी नहीं काटने देता था और न उन्हें बाग के फल और जंगल की पैदावार काम में लाने देता था जिसमें किसी के परिश्रम और प्रयत्न को कोई स्थान नहीं।

जमींदार को इतनी भूमि की क्या आवश्यकता है जो प्रतिवर्ष बेकार पड़ी रहती है।

घृणा के एक तीव्र भाव के साथ, जो उसे पैतृक सम्पत्ति के तौर पर मिला था और किसी का सिखाया हुआ नहीं था, उसे यह प्रतीत होने लगा—और उसने यह निर्णय कर लिया कि इस कष्ट का केवल एक उपाय यही है कि इन सब चीजों का अन्त हो जाये।

अब इसके बाद क्रांति आती है और इससे पहले का चित्र कैसा सुन्दर खींचा गया है।

(१६)

प्रातःकाल हवा कुछ मन्द सी थी।

सूर्य आग का गोला प्रतीत होता था।

आकाश का रंग नीला और स्वच्छ था।

अपने फावड़े की पूरी शक्ति के साथ फरमीन उपजाऊ मिट्टी का एक बड़ा टुकड़ा तोड़ रहा था।

लम्बाई में बराबर की हलाइयां आगे चलकर दृष्टि से ओझल हो गई थी। नये जुते हुए खेत से मिट्टी की नमी की सुगन्ध उठ रही थी।

कभी २ ठण्डी हवा के झोंकों से सूर्य की किरणों की गर्मी कम हो जाती थी। फरमीन के हृदय में विचित्र २ भाव उत्पन्न हो रहे थे—वह प्रसन्न चित्त था।

वह सीटी बजा रहा था कि अन्दर की हवा जो उसकी छाती में भरी हुई थी और उसे सांस लेने से रोक रही थी, निकल जाये। अंधविश्वास उसका जातीय-गुण था। उसने कौवों की कांय २ जो खाने की खोज मे, एक खेत से दूसरे खेत में उड़कर जा रहे थे, जब सुनी तो उसे एक बहुत बड़ा अपशकुन समझा।

वह सहसा काम करने से रुक गया।

और जरा दम लेने के लिये बैठ गया। इधर-उधर की बातें सोचने लगा। यह उसके जीवन में प्रथम अवसर था जबकि उसके हृदय में क्रांति के ऐसे विचार उत्पन्न हो रहे थे।

क्रांति के संचालकों मे मतभेद होता जा रहा है और पेड्रो तंग आकर अपने बाल बच्चों मे लौट आता है।

(२४)

फरमीन उसके पिता और उसकी माता एक छोटे से साधारण घर में रहते हैं।

उसका भीतरी भाग अत्यन्त स्वच्छ, सादा और सुन्दर है।

ग्रामीण वस्तुओं ने इस घर को और भी सुन्दर बना दिया है।

फरमीन का अपना एक घोड़ा है।

उसकी मां के पास अब एक सीने की मशीन, एक ऊनी चादर और एक रेशमी कमीज भी है।

उसके यहां चार गाय बैल और बकरियां भी हैं।

वह नगर के समीप एक बड़ी जमींदारी पर 'कर' देने वाले किसान की तरह रहते हैं।

पेड्रो अब क्रांति से लौट आया है परन्तु उसका पद अभी तक वैसे का वैसा ही बना हुआ है।

उसकी आय केवल अपनी मजदूरी, गाय बैल और खेती बाड़ी के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं।

वह वैसे ही वस्त्र पहिनता है जैसे कारिन्दा पहिनता था।

उसकी बन्दूक, उसकी कारतूस की पेटियां उसके सिरहाने हर समय लटकी रहती है।

वही जमींदार अब उसे एक उचित लगान पर जमीन जोतने के लिये देता है।

जब कारिन्दा काम देखने के लिए आता है और घर से गुजरता है तो वह हर एक को सलाम करता है और फरमीन का हाल पूछता है। फरमीन सवेरे अपने बाप के साथ काम करता है और तीसरे पहर में गांव की पाठशाला में जाता है।

उसने अब लिखना पढ़ना सीख लिया है।

इतवार के दिन वह गांव में घूमने-फिरने के लिये जाता है। तीसरे पहर में वह बातें करने के लिये कुछ लोगों को जमा कर लेता है। जन्मदिन और दूसरे त्यौहारों में फरमीन एक विशेष स्थान का मालिक है। क्रांति के बाद प्रजातंत्र स्थापित होता है और किसानों को तमाम आवश्यक अधिकार देता है—और फरमीन भी

एक ऊंचे वर्ग का मनुष्य बन जाता है।

(२७)

फ़हमीन अब एक बड़ा आदमी हो गया है। शारीरिक, मानसिक और हर तरह से।

वह अपनी भूमि पर और जमींदारों से लगान पर भूमि लेकर जोतता है—उसे बस्ती के किसानों ने मिलकर अपनी सभी समस्याओं मे प्रतिनिधि चुन लिया है और वह वेतन (मजदूरी), काम का समय और उसकी मात्रा के सम्बन्ध मे इनकी ओर से बातचीत करता है। उसने गांव की पाठशाला मे अपनी प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर ली. लेकिन इतिहास, समाचार पत्र और राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याओं पर पत्रिकाओं के अध्ययन से वह अपनी शिक्षा अभी प्राप्त करता रहता है।

उसका अपना एक छोटा सा पुस्तकालय है।

वह पाठशाला का बड़ा सहायक है और सदैव अपने मित्रों से अपने बच्चो को पाठशालाओं में भेजने के लिये आग्रह करता रहता है।

अपने अवकाश के समय मे वह आराम करता है और अपने बाजे से अपने को प्रसन्न रखता है।

इसने अपनी जमीन (रियासत) व प्रांत के भिन्न २ भागों का दौरा किया और उसने खेती और पशु पालने के भांति २ के ढङ्गों का अध्ययन किया है। उसने स्वयं भी पशु पाले हैं और खेती के नये ढङ्गों पर प्रयोग कर रहा है।

उसने अपने बाप दादा के हल को बदल कर एक नये ढङ्ग का हल अपनाया है। वह जल्दी ही एक ट्रैक्टर प्राप्त करने के सोच-विचार में है।

राष्ट्रीय छुट्टियों के समय वह बड़ा समारोह करता है।

क्रांति के बाद जब शान्ति हो जाती है तो राष्ट्रीय सभाओं के चुनाव का समय आता है और उसमें 'फरमीन का चुनाव हो जाता है।

(२६)

फरमीन को राष्ट्रीय कांग्रेस में प्रतिनिधि चुनकर भेजा जाता है।

उसके पिता ने वे सभी अधिकार जो दूसरे मनुष्यों ने उसे दे रक्खे थे उसको (फरमीन को) दे दिये हैं।

फरमीन ने कभी हथियार हाथ में नहीं लिया था।

उसने कभी एक गोली भी नहीं चलाई थी।

उसने कभी किसी को जान से भी नहीं मारा था।

परन्तु क्रांति के सिद्धांतों की उसकी अपेक्षा अधिक साहस और वीरता से रक्षा करने वाला और दूसरा कोई नहीं है।

उससे अधिक अपनी जाति और कौम वालों की सहायता करने वाला और कोई नहीं है। वह क्रांति की उपज है।

वह अत्याचारियों और दूसरों के अधिकार छीनने वालों के अत्याचारों और कठोरता से परिचित है।

फरमीन अपनी वास्तविकता, अपने भूतकाल और अपने

विचारों को कभी नहीं छोड़ेगा। उसे अपनी जाति पर पूरा भरोसा है और उसके लिये अपने प्राण भी न्यौछावर कर देगा।

फरमीन कांग्रेस का सदस्य चुन लिया जाता है, वह उनकी सभाओं में सम्मिलित होता है। वह किसी गुट अथवा व्यक्ति के स्वार्थ के लिये किसी का साथ नहीं देता है बल्कि उसकी दृष्टि में सभी जातियों की भलाई रहती है। वह उन्हीं समस्याओं में साहस के साथ भाग लेता है।

(३१)

जब राष्ट्रीय-शिक्षा का कानून वाद-विवाद के लिये आया तो फरमीन ने भी उस पर प्रकाश डालना चाहा।

परन्तु प्रश्नों, आक्षेपों और व्याख्यानों के शोरगुल में उनकी आवाज़ किसी ने नहीं सुनी।

फरमीन ने फिर एक प्रयत्न किया और उसकी ओर ध्यान हुआ।

वह अपने स्थान से उठता है, वक्ताओं के स्थान पर जाता है, धैर्य और दृढ़ता के साथ कहता है:—

'साथियो ! मैं तुम से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि देश मे सब के लिये एक प्रकार की राष्ट्रीय शिक्षा होनी चाहिये, किसी हो अथवा दूसरा, अमीर हो या गरीब, कैथोलिक हो अथवा प्रोतस्ताई।

तमाम मेक्सिको वालों को समान अवसर प्राप्त हों कि वे अपनी जीविका के लिये एक सी शिक्षा प्राप्त कर सकें।

साथियो ! मैं तुम से यह निवेदन करूंगा कि हमारे लिये, जो

गांव में रहते हैं, पाठशालाएं होनी चाहिएं। यह देखकर कि हमारे बहुत से माता-पिता अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दिला सकते हैं, इसलिये कम से कम उन बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये। पाठशालाओं में हमारे बच्चों को काम से प्रेम करना सिखाना चाहिये। यही एक उपाय है जिससे वे निर्धनता और पूंजीपतियों के दासत्व में न फसेंगे।

उन्हें इस बात की शिक्षा और प्रेरणा मिलनी चाहिये कि वास्तविक धर्म यह है कि अपने पड़ोसी की सहायता की जावे और मनुष्यों के प्राणों की रक्षा की जावे। सबके साथ न्याय किया जावे तथा स्वतन्त्रता, विश्व भ्रातृ-भाव का सम्मान किया जावे।"

भावों से कंपित फरमीन नीचे आया।

दूसरे सदस्य बोलने की आज्ञा चाहते हैं।

सभापति घंटी बजाता है।

प्रश्न ! प्रश्न !!

शिक्षा का कानून पास हो जाता है।

अब इसके बाद 'भूमि पर अधिकार और उसके विभाजन' का कानून आता है। फरमीन एक बार बड़े उत्साह के साथ भाषण देता है।

२७ वीं धारा पर विचार हो रहा है।

फरमीन भाषण की आज्ञा चाहता है, और भय से कि संभव है उसे आज्ञा न मिले, वह मंच पर झपट कर पहुंच जाता है।

कहा जा सकता है कि उसके बड़े २ विरोधी हैं।

वह एक ज्वालामुखी पर्वत की भांति फूटना ही चाहता है।

वह अत्यन्त शुद्ध, धीमी और नपी-तुली आवाज मे बोलता है।

"मेरा भाषण एक हजार वर्ष पहिले की आवाज है, जो आज ताजा होकर निकल रही है। यह मेरी जाति की आत्मा की आवाज है। वह जाति जो दुर्दशा और संकट में पड़ी हुई थी और अब आशा है कि इस २७ वीं धारा के साथ जो हम स्वीकृत कर रहे है—फिर से जी उठेगी।

वह जाति जो आज तुम से मेरे द्वारा सम्बोधित है समस्त राजनीतिक और सामाजिक क्रांतियो में पशुओं के चारे का काम देती रही है, हम अब उसे जारी नहीं रख सकते।

वह जाति जो आज मेरे द्वारा तुम से बातचीत कर रही है अपने रक्त और पसीने से इस भूमि को सींचती रही है ताकि जाति के हजारों अयोग्य व्यक्तियों का पालन-पोषण हो जो हाथ में फावड़े और कुदाल का छूना नीची दृष्टि से देखते है। वह उन मनुष्यों की हँसी और खिल्ली उड़ाते है जो धूप और वर्षा की कठोरता झेलती रही है। उन्होंने कभी सहानुभूति और ध्यान से उस दुख भरी कहानी को सुना तक नहीं जो गीतों और प्रार्थनाओं के रूप में निकलती रही है।

वह जाति, वह जाति, जो आज तुम से मेरे द्वारा सम्बोधन कर रही है—यह कह रही है:—

"यदि भूमि के मालिक वे मनुष्य हैं जो उसे जोतते है और बोते हैं तो उसके विभाजन का कार्य शुरू कर देना चाहिये।

हम हैं उसके मालिक, हमने उसका मूल्य चुकाया है। असल से अधिक और समय से पहिले। उस त्याग की कोई पूर्ति हो सकती है तो वह जमीन, पाठशालाएं, ऋण न्याय और स्वतन्त्रता है।"

उसके इस भाषण के बाद कानून पास हो जाता है।

फरमीन अपने गांव को वापिस आता है।

उसके लौटने पर उसके मतदाता, नारे, गायन आतिशबाजी और भांति २ के तमाशों से उसका स्वागत करते हैं। उसका पिता उसे खूब गले लगाता है।

उसकी माता देख कर हर्ष के आँसू बहाती है।

फरमीन की आंखों से भी अश्रु-धारा बह निकलती है।

और वह भर्राई हुई आवाज में केवल इतना कहता है :—

'पिता!'

'माता!!'

फरमीन का अन्तिम युग!!

(३५)

फरमीन, उसके पिता और उसकी माता एक छोटे से मामूली कच्चे मकान में रहते हैं।

वह अन्दर से बहुत सादा है परन्तु बहुत साफ और सुथरा।

उसकी मां के पास एक सीने की मशीन है, एक ऊनी चादर और एक रेशमी कमीज।

पेड्रो क्रांति के तमाम कामों से अलग हो गया है परन्तु उनका पद अभी तक बना हुआ है।

वह अपने अधिकार की भूमि जोतता है और बोता है और गांव के जमींदार से भी लेकर। फरमीन के अपने गाय-बैल हैं और वह कारिन्दे से अच्छा खाता पहनता है।

दो ३०–३० की बन्दूके और भरे कारतूस की पेटियां उनके सिरहाने लटकती रहती हैं।

केवल इस प्रकार उन्हें 'न्याय' और 'सत्य' के मिलने की आशा हो सकती है।

"पुस्तक के कुछ चित्र"

१. फरमीन और उसका बाप दोनों काम पर जा रहे हैं।

२. फरमीन काम कर रहा है और अपने माथे से पसीना पोंछ रहा है।

३. वेतन बँटने का दिन, फरमीन अपने पिता को आधे दिन की मजदूरी पाते हुये देखता है।

४. फरमीन के पिता अपने मित्रों के कहने से क्रांति में भाग लेने के लिये जाता है और फरमीन को कुदाल-फावड़े देकर भेज रहा है।

५. फरमीन बैठा सोच रहा है कि 'काश! वह पढ़ना लिखना जानता।

६. फरमीन और उसकी माता घर से निकाल दिये जाते हैं और वे एक पड़ोसी के यहां शरण लेते हैं। उनका अपना मकान जला दिया जाता है।

७. फरमीन धारा सभा में लोक-शिक्षा के समर्थन में भाषण दे रहा है।

८. उसका नया मकान, 'बन्दूकें जो उसके अधिकारों की रक्षक हैं' साफ दिखाई पड़ती है।

सहायक पुस्तकें

	पुस्तक का नाम	लेखक
1.	The House of the people	Kotherine M Cook
2	A Peep at Mexico	Fred Mc Custion Julius Rosenwald Oundtion, Tenn (अप्रकाशित)
3	Rural Education in Mexico	Rafael Ramirez (Address before the 6th Seminar in Mexico, 1931) (अप्रकाशित)
4	The Triumph of the Rural Socialistic School 1935.	Clso Florez Zamora (अप्रकाशित)
5	Mexico and Certain Aspects of Its Rural & Indian-Education	Prof Rafcal Remirez, Federal Director of Rural Education for Mexico (अप्रकाशित)
6.	Difficulties Encountered in Mexico's Rural School Experiment.	Walter G M [illegible] (Commiss[illegible] of [illegible] Education Philip[illegible])
7.	School Paper Illustrated with Woodcuts	(अप्रकाशित)
8	Fermin—A Mexican Reader.	Manuel [illegible] (Translat[illegible] from Span[illegible] [illegible]) (अप्रकाशित)

मान चित्र मेक्सिको
संयुक्त राज्य अमेरिका
कैलीफोर्निया की खाड़ी
तमौलीपस
मेक्सिको
मेक्सिको की खाड़ी
प्रशान्त महासागर
मध्य अमेरिका